# व्याकरण-नवेन्दु

( छठे और सातवें वर्गों के लिए )

कमलाकान्त उपाध्याय, हिन्दीरत्न

क्रिया
( अकर्मक, स...
काल
भूतकाल के भेद
वर्त्तमान काल के भेद
( सामान्यवर्त्तमान, तात्कालि...

साहित्य-मन्दिर

# विषय-सूची

## चतुर्थ उत्थान



## पंचम उत्थान



## परिशिष्ट

# व्याकरण-नवेन्दु

## प्रवेश

जिसके द्वारा बोलकर या लिखकर मनुष्य अपने भावों को एक दूसरे पर स्पष्ट रूप से प्रगट कर सकता है, उसे *भाषा* कहते हैं।

भाषा का अर्थ है बोली या जबान। सारी दुनिया की भाषा एक तरह की नहीं है। भिन्न-भिन्न देश के लोग भिन्न-भिन्न तरह की भाषाएँ बोलते हैं। हमलोग जिस भाषा में अपने मनोगत भावों को प्रगट करते हैं उसका नाम है *हिन्दी*।

जब हम किसी से कुछ कहना चाहते हैं तब हमारी कोशिश रहती है कि सुननेवाला हमारी बोली ठीक-ठीक समझ सके। अगर हम किसी से केवल इतना ही कह दें—'गाय' तो वह हमारे मन के भाव को अच्छी तरह नहीं समझ कर झट बोल उठेगा—'गाय क्या' ? तब हमें गाय के संबंध में अपने मन के भाव को इस रूप में प्रगट करना पड़ेगा—'गाय चरती है' या 'गाय भाग गई'।

अतएव, ऐसी बात को जिसके सुनने से कहनेवाले का पूरा अभिप्राय समझ में आ जाय, *वाक्य* कहते हैं।

बोलने के समय हमारे मुँह से ऐसी आवाज या ध्वनियाँ निकलती हैं जिनसे अर्थ प्रगट होता है। ये ध्वनियाँ शब्द हैं, इन्हीं

अर्थपूर्ण ध्वनियों या शब्दों को मिलाकर हम इस ढंग से व्यवहा करते हैं जिससे हमारी बात दूसरा आदमी ठीक-ठीक समझ ले है। दूसरे शब्दों में, पूर्ण अभिप्राय प्रगट करनेवाले शब्द-सम को *वाक्य* कहते हैं।

हम कभी बोलकर और कभी लिखकर अपने मनोगत भा प्रगट करते हैं। लिखी हुई भाषा में शब्दों की मूल ध्वनियों पहचानने के लिए हर भाषा में अलग-अलग चिह्न नियत रहते हैं ये चिह्न *वर्ण* या *अक्षर* कहलाते हैं।

संक्षेप में, मूल-ध्वनियों के लिए जो चिह्न हैं, वे वर्ण या अक्ष कहलाते हैं। अक्षरों के मेल से शब्द बनते हैं और शब्दों के मेल वाक्य। वाक्य ही भाषा के मुख्य अंग हैं।

लेकिन वर्णों से शब्द और शब्दों से वाक्य बनाने के लि भाषा-शास्त्र के कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है। अ हम उन नियमों का पालन नहीं करें तो हमारी भाषा उटपटांग अ अशुद्ध हो जायगी। उन्हीं नियमों को जानने के लिए व्याक पढ़ना पड़ता है।

अतः *व्याकरण* उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें शुद्ध-शुद्ध बो या लिखने के विधान बतलाये जाते हैं।

व्याकरण के जिस खंड में वर्णों या अक्षरों के आकार, ना उच्चारण और उनके मेल से शब्दों के बनाने की विधियाँ बतलाई जाती हैं उस खंड को वर्ण-विचार कहते हैं; जिस खंड में शब्दों अवस्था, बनावट, भेद, अर्थ आदि का वर्णन रहता है उसे श

विचार या *शब्द-साधन* कहते हैं; और जिसमें वाक्यों के बनाने और उनके प्रयोग के नियम बतलाए जाते हैं उसे *वाक्य-विन्यास* कहते हैं।

उपर्युक्त तीन विभागों के अतिरिक्त व्याकरण में दो और विभाग रहते हैं—(१) *चिह्न-विचार*, जिसमें विराम आदि चिह्नों का निरूपण किया जाता है और (२) *छन्द-विचार*, जिसमें पद या छन्द के नियमादि रहते हैं। मगर गद्य की भाषा में छन्द-विचार की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

### अभ्यास

१. वर्ण या अक्षर से क्या समझते हो? २. वाक्य किसे कहते हैं? ३. व्याकरण के कितने अंग हैं और कौन-कौन? ४. इन वर्णों के मेल से शब्द बनाओ—त्र. हा, दे, म; ती, श्व, भा, वि, र; र,म, हि, नो। ५. इन शब्दों के मेल से वाक्य बनाओ—(१) है, में, नदी, की, बंगाल, गंगा, गिरती, खाड़ी। (२) नहीं, मोहन, सुख, को, मिला, कभी। (३ राम, चरती, गाय, मैदान, है, की, में, घास, हरी-हरी।

---

# प्रथम उत्थान

## वर्ण-विचार

**वर्ण और अक्षर**—शब्दों के जिस खंड का विभाग नहीं हो सकता है उसे *वर्ण* कहते हैं। वर्णों को लिखने के लिए जो चिह्न नियत हैं, उन्हें अक्षर या *लिपि* कहते हैं।

हिन्दी भाषा जिन अक्षरों में लिखी जाती है, उन्हें *देवनागरी* या *नागरी लिपि* कहते हैं। नागरी लिपि में जितने अक्षर हैं उनके समूह को *वर्णमाला* कहते हैं।

**स्वर और व्यंजन**—हिन्दी वर्णमाला में कुल ४७ वर्ण या अक्षर हैं। इनके दो भेद हैं—स्वर और व्यंजन।

जिन वर्णों का उच्चारण किसी दूसरे वर्ण की सहायता के बिना हो जाता है और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं, वे स्वर कहलाते हैं तथा जो वर्ण स्वर की सहायता से बोले जाते हैं, वे व्यंजन कहलाते हैं।

हिंन्दी वर्णमाला में नीचे लिखे स्वर और व्यंजन हैं :—

**स्वर**— अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ—कुल ११

**व्यंजन**— क ख ग घ ङ······कवर्ग।
च छ ज झ ञ······चवर्ग।
ट ठ ड ढ ण ······टवर्ग।
त थ द ध न ······तवर्ग।
प फ ब भ म ······पवर्ग।

य र ल व ····अन्तस्थ। श ष स ह ······ऊष्म।
ड़, ढ़, अनुस्वार ( ं ) और विसर्ग ( : )।

**स्वर के भेद**— अ इ उ और ऋ—इन चारों स्वरों के उच्चारण में शेष स्वरों की अपेक्षा कम समय लगता है और इनकी उत्पत्ति दूसरे स्वरों से भी नहीं होती। ऐसे स्वर ह्रस्व या मूल स्वर कहलाते हैं।

लेकिन, आ ई ऊ ए ऐ ओ और औ— ये आठों स्वर ऊपर के चारों मूल स्वर के संयोग से बने हैं—अ+अ=आ ; इ+इ=ई ; उ+उ=ऊ ; अ+इ=ए ; अ+ए=ऐ ; अ+उ=ओ ; अ+ओ=औ। अतः ये आठों स्वर *सन्धि* या *दीर्घ* स्वर कहलाते हैं और इनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा दूना समय लगता है।

मात्रा—मात्रा का अर्थ है काल का मान। अतः एक ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसके मान या परिमाण को मात्रा कहते हैं। अतः जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा लगती है अर्थात् ह्रस्व स्वर को *एकमात्रिक* या लघु कहते हैं और जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राएँ लगती हैं अर्थात् दीर्घ स्वर को गुरु कहते हैं।

'अ' को छोड़कर शेष सभी स्वर जब व्यंजन में मिलते हैं तब लिखने में उनका रूप बदल जाता है। उन्हें भी *मात्रा* ही कहते हैं। जैसे ; आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ का रूप क्रमशः इस प्रकार हो जाता है— ा ि ी ु ू ृ े ै ो और ौ।

**व्यंजन के भेद**—उच्चारण की दृष्टि से व्यंजन वर्णों के तीन भेद हैं :—स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म।

क से म तक के २५ वर्ण कंठ, तालु, दाँत, ओठ आदि मुँह के भिन्न-भिन्न भागों के स्पर्श से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें *स्पर्श* वर्ण कहते हैं।

य र ल और व—इन वर्णों का उच्चारण जीभ, तालु, दाँत,

SHEO KUMAR ROY

ओठ आदि के आपस में सटाने से होता है; मगर किसी में इनक
पूरा-पूरा स्पर्श नहीं होता है। अतः ये वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं।

श ष स और ह—इन वर्णों के उच्चारण में जीभ का संचाल
तो होता है, मगर इसके साथ-साथ भीतर की ऊष्म वायु को बाह
फेंकना पड़ता है। अतः ये वर्ण ऊष्म कहलाते हैं।

अनुस्वार और विसर्ग का उच्चारण भी ऊष्म वर्णों की तर
होता है।

हल्—जब व्यंजन अपने मूल रूप में रहता है तब उस
नीचे एक छोटी तिरछी लकीर लगा देते हैं जिसे हल् ( ् )कहते है
यद्यपि व्यंजनों का उच्चारण स्वर के बिना नहीं हो सकता है
फिर भी हलंत व्यंजनों को बिना स्वर का मान लिया जाता है
जैसे, क् च् ल् इन व्यजनों के साथ अ संयुक्त नहीं है।

उच्चारण-स्थान—सभी वर्णों का उच्चारण मुँह के भिन्न-भि
अंगों से होता है। कोई कंठ से बोला जाता है तो कोई तालु, मू
आदि से। अतः उच्चारण-स्थान के भेद से सभी वर्णों का वर्गीकर
इस प्रकार हो सकता है :—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अ आ क ख ग घ ङ ह | कंठ से | बोले जाने के | कारण | कंठ्य वर्ण |
| इ ई च छ ज झ ञ य श | तालु | ” | ” | तालव्य वर्ण |
| ऋ ट ठ ड ढ ण र ष | मूर्द्धा | ” | ” | मूर्द्धन्य ” |
| त थ द ध न ल स | दाँत | ” | ” | दन्त्य ” |
| उ ऊ प फ ब भ म | ओठ | ” | ” | ओष्ठ्य ” |

ए ऐ — कंठ-तालु से बोले जाते हैं।
ओ औ — कंठ-ओठ " " ।
व — दाँत-ओठ से बोला जाता है।

### अभ्यास

१. स्वर और व्यञ्जन से क्या समझते हो? २. ह्रस्व स्वर कितने हैं और कौन-कौन? ३. दीर्घ स्वर कितने हैं और कौन-कौन? ४. कवर्ग, चवर्ग और पवर्ग के उच्चारण स्थान बतलाओ। ५. स्पर्श-वर्णों से क्या समझते हो? स्पर्श व्यञ्जनों के नाम बतलाओ।

---

# द्वितीय उत्थान

## शब्द साधन

हम प्रायः दो तरह के शब्द सुना करते हैं। एक तरह के शब्द ऐसे होते हैं जिनकी ध्वनि-मात्र ही हमारे कान में जाती है, उनका अर्थ हम नहीं समझ सकते। दो पदार्थों के आपस में टकराने से जो ध्वनि सुनाई पड़ती है या पशु-पक्षियों के मुँह से जो आवाज निकलती है, वे सब शब्द इसी तरह के हैं। ऐसे शब्दों का न तो हम हूबहू उच्चारण कर सकते हैं और न उन्हें लिख ही सकते हैं। ऐसे शब्द ध्वन्यात्मक कहलाते हैं।

दूसरे तरह के वे शब्द हैं जिनकी ध्वनि तो हम सुनते ही हैं; साथ ही उनके अलग-अलग खंडों को भी हम साफ-साफ सुन लेते

हैं और उन्हें लिख भी लेते हैं। मनुष्य के मुँह से जो ध्वनियाँये निकलती हैं वे इसी तरह के शब्दों की श्रेणी में आती हैं। ऐसे शब्द *वर्णात्मक* कहलाते हैं।

मगर, कभी-कभी मनुष्य के मुँह से भी कुछ ऐसे अंटसंट शब्द निकल पड़ते हैं जिन्हें हम लिख तो सकते हैं, मगर उनका अर्थ नहीं समझ पाते या वे अर्थहीन होते हैं। अतः वर्णात्मक शब्द भी दो तरह के हो जाते हैं—( १ ) जो वर्णात्मक शब्द अर्थहीन होते हैं वे *निरर्थक* कहलाते हैं और ( २ ) जिनका कुछ न कुछ अर्थ निकलता है वे *सार्थक* कहलाते हैं।

सार्थक शब्द ही भाषा के आधार हैं; इसलिए व्याकरण में सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाता है। लेकिन जब निरर्थक शब्द भी किसी रूप में सार्थक बना लिये जाते हैं तब उनके ऊपर व्याकरण का अधिकार हो जाता है। जैसे; वह *आयँ-बायँ* बकता है, मेढ़क टर्र-टर्र करता है।

कभी-कभी ध्वन्यात्मक शब्दों को भी सार्थक शब्द बना लिया जाता है। ऐसे शब्द अनुकरण वाचक कहलाते हैं। जैसे, बकरी 'मेमियाती' है; गदहा 'रेंकता' है; बंदर 'किकियाता' है आदि।

**हिंदी भाषा का शब्द-भंडार**—पहले हमारे देश में पढ़े-लिखे लोगों की भाषा संस्कृत थी और साधारण बोल-चाल की भाषा प्राकृत कहलाती थी। प्राकृत भाषा का रूप बदल जाने से अनेक अपभ्रंश भाषाएँ बनीं और उन्हीं अपभ्रंश भाषाओं से हिंदी भाषा का विकास हुआ है। इसलिए हिंदी में मुख्यतः दो प्रकार के शब्द

पाये जाते हैं। एक तो वे शब्द जो प्राकृत या अपभ्रंश के द्वारा अपना रूप बदलते हुए आजतक हिन्दी में बोले जाते हैं। ऐसे शब्द तद्भव कहलाते हैं। हिन्दी की कुल क्रियाएँ और सर्वनाम तथा अधिकांश संज्ञाएँ, विशेषण और क्रिया-विशेषण तद्भव ही हैं।

दूसरे प्रकार के वे शब्द हैं, जो संस्कृत के हैं और अपने मूल रूप में—तोड़-मरोड़कर नहीं—हिन्दी में प्रयोग में आते हैं। ऐसे शब्द *तत्सम* कहलाते हैं।

हिंदी में तीसरे प्रकार के कुछ ऐसे शब्द मिलते हैं जो समय-समय पर गढ़ लिये गये हैं या आदिवासियों की भाषाओं से आकर इसमें मिल गये हैं। ऐसे शब्द **देशज** कहलाते हैं।

इसके अतिरिक्त जिन-जिन देशों के लोगों का इस देश से संबंध रहा था है उन-उन देशों की भाषाओं के भी अनेक शब्द हिंदी में घुस आये हैं और दिनों-दिन घुसते जा रहे हैं। ऐसे शब्द *परकीय* या *विदेशी* कहलाते हैं। प्रांतीय भाषाओं के शब्द भी इसी श्रेणी में आ सकते हैं।

ध्वनियों के अनुकरण से हिन्दी में जो शब्द गढ़ लिये गये हैं उन्हें *अनुकरण वाचक* शब्द कहते हैं। संक्षेप में, हिंदी में जितने शब्द प्रचलित हैं उनके मुख्य पाँच वर्ग हो सकते हैं :—

१. तद्भव—मुँह, रात, खेत, मिट्टी, नींद, प्यास आदि।

२. तत्सम—माता, पिता, मनुष्य, तारा, ग्रह, देव आदि।

३. देशज—बेटा, बाप, डाभ, लच्छा, लगभग आदि।

४. अनुकरणवाचक—मचमचाना, खटखटाना आदि।

५. परकीय—किताब, अदालत, हाकिम, फकीर (अरबी); दूकान, चाकू, हलका, पतला (फारसी); नीलम, कमरा आदि (पुर्तगीज); कंट्रोल, रेशन-कार्ड, कोटा, कलक्टर, एसेम्बली आदि अँगरेजी); चाकू, लागू, प्रगति (मराठी); नितांत, संभ्रांत, उपन्यास आदि (बंगला)।

**शब्दांश**—भाषा में कुछ ऐसी वर्णात्मक ध्वनियाँ भी हैं जो स्वयं तो कोई अर्थ नहीं रखतीं, लेकिन जब वे शब्दों के आगे या पीछे जोड़ी जाती हैं तब सार्थक हो जाती हैं। ऐसी परतंत्र ध्वनियों को *शब्दांश* कहते हैं। जैसे, वि, सु, ता, वट, से, ने आदि।

**उपसर्ग और प्रत्यय**—जो शब्दांश शब्द के पहले जोड़े जाते हैं वे *उपसर्ग* कहलाते हैं और जो शब्द के बाद जोड़े जाते हैं वे *प्रत्यय* कहलाते हैं। जैसे; प्र, सु, परा, अप आदि शब्दांश उपसर्ग हैं और ता, वट, ने, से आदि प्रत्यय हैं।

प्र—प्रबल, प्रमुख। परा—पराक्रम। अप—अपयश आदि
ता—प्रभुता। वट—थकावट। ने—रामने। से—मोहन से आदि

शब्दांशों को जोड़ने से मूल शब्दों के रूप में तो परिवर्तन होता ही है; साथ ही उनके अर्थ में भी विशेषता आ जाती है।

**सार्थक शब्द के भेद**—शब्दार्थ के विचार से शब्द के कई भेद हो जाते हैं—१ रूढ़—ऐसे शब्द, जिनके अलग-अलग खंडों का कोई अर्थ नहीं निकलता, रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे; घोड़ा। इस शब्द के दो खंड हैं—घो+ड़ा। इनमें न तो 'घो' का कोई अर्थ है

और न 'ड़ा' का; लेकिन दोनों के जुट जाने से 'घोड़ा' एक सार्थक शब्द हो जाता है।

(२) यौगिक—ऐसे शब्द, जिनके खंड भी सार्थक होते हैं, *यौगिक* शब्द कहलाते हैं। दो या अधिक रूढ़ शब्दों के मेल से यौगिक शब्द बनते हैं। जैसे; 'विद्या' और 'आलय' के मिलने से 'विद्यालय'।

(३) कभी-कभी यौगिक संज्ञा-शब्द अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रगट करते हैं। ऐसी अवस्था में वे *योगरूढ़* संज्ञा-शब्द कहलाते हैं। जैसे, 'पंकज' शब्द यौगिक है और इसका अर्थ है 'कीचड़ में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ,' मगर जब 'पंकज' कमल के अर्थ में आता है तब वह योगरूढ़ हो जाता है।

एक शब्द से दूसरा नया शब्द बनाने की क्रिया को *व्युत्पत्ति* कहते हैं। व्युत्पत्ति के विचार से सारे सार्थक शब्द दो भागों में विभक्त हैं—(१) विकारी और (२) अविकारी।

**विकारी शब्द**—जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन, कारकादि के कारण बदलते रहते हैं वे *विकारी* शब्द कहलाते हैं और जिनके रूप कभी नहीं बदलते हैं वे *अविकारी* या *अव्यय* कहलाते हैं। अर्थ के विचार से विकारी और अविकारी—दोनों तरह के शब्दों के चार-चार भेद माने जाते हैं:—

**विकारी के भेद**—(१) संज्ञा—वस्तुओं के नाम बतलाने वाले शब्द *संज्ञा* कहलाते हैं। जैसे; राम, घोड़ा, बड़ाई, लोटा आदि।

(२) सर्वनाम—संज्ञा-शब्दों के बदले में आनेवाले शब्द *सर्वनाम* कहलाते हैं। जैसे; मैं, हम, तुम, वह आदि।

(३) विशेषण—संज्ञा-शब्दों की विशेषता या गुण प्रगट करने वाले शब्द *विशेषण* कहलाते हैं। जैसे; लाल, लंबा, अच्छा, बड़ा आदि।

क्रिया—जिन शब्दों से काम करने या होने का बोध हो, उसे *क्रिया* कहते हैं। जैसे; करना, देखना, सोना, खाना आदि।

**अविकारी के भेद**—(१) क्रिया-विशेषण—क्रिया की विशेषता बतलानेवाले अविकारी शब्दों को *क्रिया-विशेषण* कहते हैं। जैसे; धीरे-धीरे, आज, कल, परसों आदि।

(२) संबंधबोधक—शब्दों के संबंध को बतलानेवाले अविकारी शब्द *संबंधबोधक* कहलाते हैं। जैसे; सहित, समेत आदि।

(३) समुच्चयबोधक—दो शब्दों या वाक्यों को परस्पर जोड़ने या अलग करनेवाले शब्द *समुच्चयबोधक* कहलाते हैं। जैसे; कि, या, और, अथवा आदि।

(४) विस्मयादिबोधक—हर्ष, विस्मय, आश्चर्य, शोक, विषाद आदि मनोविकारों को सूचित करनेवाले अविकारी शब्द *विस्मयादिबोधक* कहलाते हैं। जैसे; बापरे! हाय! ओह!

## अभ्यास

१. शब्द किसे कहते हैं? २. शब्दों के कितने भेद हैं? उदाहरण के साथ समझाओ। ३. सार्थक शब्द के कुल कितने भेद

हो सकते हैं ? ४. प्रत्यय और उपसर्ग से क्या समझते हो ? ५. विकारी और अविकारी शब्द से क्या समझते हो ? इनके आठों भेदों के लक्षण उदाहरण के साथ बताओ।

## वाक्य-विचार

पहले कहा जा चुका है कि ऐसे शब्द या शब्द-समूह को, जिसके सुनने से कहनेवाले का पूरा अभिप्राय समझ में आ जाय, *वाक्य* कहते हैं। जैसे; आम के पेड़ पर एक काला कौवा काँव-काँव कर रहा है।

**वाक्यांश और वाक्य-खंड**—ऊपर के वाक्य के तीन अलग-अलग अंश हैं—आम के पेड़ पर, एक काला कौवा और काँव-काँव कर रहा है। ये तीनों अंश *वाक्यांश* कहलाते हैं। उसी प्रकार 'ज्योंही मैं वहाँ पहुँचा त्योंही सब लड़के भाग चले'—इस वाक्य के दो खंड हैं—(१) ज्योंही मैं वहाँ पहुँचा और (२ त्योंही सब लड़के भाग चले। अतः वाक्य के ऐसे खंड को जिससे पूरा-पूरा तो नहीं, बल्कि थोड़ा-बहुत अभिप्राय समझ में आ जाय वाक्य-खंड कहते हैं।

**वाक्यांग**—'मोहन खेलता है'—यह वाक्य मोहन के विषय में है अर्थात् मोहन के विषय में कहा गया है कि वह खेलता है, इस से पता चलता है कि वाक्य के दो अंग होते हैं—उद्देश्य और विधेय।

जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे *उद्देश्य* कहते हैं और उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है उसे *विधेय* कहते हैं। ऊपर के वाक्य में 'मोहन' उद्देश्य है और 'खेलता है' विधेय है।

**वाक्यांश विस्तार**—'घोड़ा चरता है'—यह एक छोटा-स वाक्य है। इस वाक्य को बढ़ा कर हम इस तरह भी लिख सक हैं:—मोहन का चितकबरा घोड़ा मैदान में धीरे-धीरे चरता है।

इस से पता चलता है कि उद्देश्य 'घोड़ा' है और उसक विशेषता बतलाने के लिए उसके साथ 'मोहन का चितकबरा'—यहाँ वाक्यांश जोड़ दिया गया है। उसी प्रकार 'चरता है' विधेय क विशेषता जताने के लिए उसके साथ 'मैदान में धीरे-धीरे' वाक्यां जोड़ा गया है। अतः वाक्य में जो वाक्यांश उद्देश्य की विशेष बतलाते हैं उन्हें *उद्देश्य का विस्तार* और जो विधेय की विशेष बतलाते हैं उन्हें *विधेय का विस्तार* कहते हैं।

कुछ और उदाहरण—

(१) मोहन पढ़ता है—शिव बाबू का बड़ा लड़का मोहन बहु धीरे-धीरे पढ़ता है।

(२) गाड़ी उलट गई—चलती गाड़ी एक-ब-एक उलट गई

(३) घोड़ा दौड़ता है—राम का लाल घोड़ा सरपट दौड़ता है

| उद्देश्य | उद्देश्य का विस्तार | विधेय | विधेय का विस्तार |
|---|---|---|---|
| मोहन | शिव बाबू का बड़ा लड़का | पढ़ता है | बहुत धीरे-धीरे |
| गाड़ी | चलती | उलट गई | एक-ब-एक |
| घोड़ा | राम का लाल | दौड़ता है | सरपट |

## अभ्यास
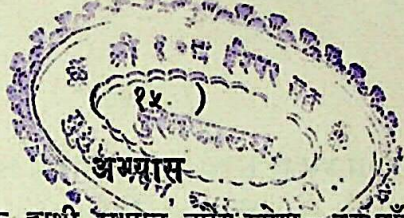
१. भारत, पुस्तक, हाथी, जापान और रमेश—इन पाँचों शब्दों को उद्देश्य मान कर अलग-अलग वाक्य बनाओ।

२. देखता है, खा चुका, आवेगा, पढ़ रहा है, लाता है—इन पाँचों शब्दों को विधेय मान कर पाँच अलग-अलग वाक्य बनाओ।

३. ऊपर के दोनों प्रश्नों के दश वाक्यों में प्रत्येक के उद्देश्य और प्रत्येक के विधेय का विस्तार करो।

४. तीसरे प्रश्न के उत्तर में जो दश वाक्य बनते हैं उनके उद्देश्य तथा उद्देश्य के विस्तार और विधेय तथा विधेय के विस्तार खाना बना कर अलग-अलग बताओ।

५. खाली स्थानों को भर कर वाक्य बनाओ:—

श्रीनेत पुस्तक......। मोहन कबड्डी......। काला कौवा......। ......धीरे-धीरे......। ......जाओ।

---

# तृतीय उत्थान

## विकारी शब्द—संज्ञा

संज्ञा किसी वस्तु को नहीं, बल्कि उसके नाम को कहते हैं। संसारमें जितनी वस्तुएँ हैं उन्हें हम दो भागोंमें बाँट सकते हैं। पहले भाग में वे वस्तुएँ आती हैं जिन्हें हम देख सकते हैं या छू सकते हैं। ऐसी वस्तुएँ मूर्त कहलाती हैं। दूसरे भाग में वे वस्तुएँ आती

हैं जिन्हें न तो हम छू सकते हैं और न देख सकते हैं। केवल कल्प
या अनुभव से हम उन्हें जानते हैं। ऐसी वस्तुएँ अमूर्त कहलाक
हैं। जैसे; घोड़ा, मोहन, सोना आदि वस्तुओं को हम देख भी सक्हैं
हैं और छू भी सकते हैं, मगर रात, दिन, चाँद, तारे आदि वस्तुम
को हम देख सकते हैं, छू नहीं सकते हैं। अतः ये सब वस्तुएँ मूर्य
हैं। लेकिन दया, भय, मृत्यु आदि वस्तुओं को हम केवल अनुभा
से जानते हैं, इसलिये ये अमूर्त्त हैं। क

सभी मूर्त्त या अमूर्त्त वस्तुओं को हम किसी न किसी नामहैं
पुकारते हैं और व्याकरण में यही नाम *संज्ञा* है। और मूर्त्त अपी
अमूर्त्त के विचार से संज्ञा के दो भेद हो जाते हैं—(१) वस्तु वा
या पदार्थ वाचक (२) *अमूर्त्त वाचक* या भाववाचक। गाय, घो
सोना आदि शब्द वस्तुवाचक हैं और दया, क्षमा, धीरता आ
शब्द, भाववाचक हैं।

वस्तुवाचक संज्ञा शब्दों में जिनसे एक का बोध हो उसे *व्यत्*
*वाचक* कहते हैं और जिनसे जाति का बोध हो उसे *जातिवाचक* क
हैं। जैसे; राम, मोहन, गंगा आदि शब्द व्यक्तिवाचक हैं अं
गाय, घोड़ा, नदी, पहाड़ आदि शब्द जातिवाचक हैं। सं

फिर जिस जातिवाचक शब्द से वस्तुओं के समूह का बोध जै
उस *समूहवाचक* कहते हैं और जिससे किसी द्रव्य या धातु का बोहै
हो उसे *द्रव्यवाचक* कहते हैं। जैसे; सभा, क्लास, झुंड, गिरोह आल
शब्द समूहवाचक हैं और सोना, चाँदी, तेल, पानी आदि श
द्रव्यवाचक हैं। जा

सभी मूर्त्त वस्तुओं में उनके धर्म, स्वभाव, गुण, भाव, आकार-प्रकार, अवस्था आदि पाये जाते हैं जिन्हें हम अनुभव से जान पाते हैं। आग में गर्मी है, जलन है, चमक है। सोने में पीलापन है, चमक है, भारीपन है, लंबाई-चौड़ाई भी है। मनुष्य में क्षमा है, दया है, दुष्टता है, सरलता है। अतएव, मूर्त्त वस्तुओं में पाये जाने वाले गुण, स्वभाव, धर्म, आकार-प्रकार, भाव आदि का बोध कराने के लिए जो संज्ञा-शब्द माने गये हैं वे *भाववाचक* कहलाते हैं। गर्मी, जलन, चमक, क्षमा, दया, दुष्टता, सरलता, भारीपन, पीलापन आदि शब्द भाववाचक हैं।

*संक्षेप में संज्ञा शब्द के पाँच भेद हुए :—*

(१) व्यक्तिवाचक—गंगा, हिमालय, मोहन, बनारस आदि।

(२) जातिवाचक—गाय, घोड़ा, सिंह, घर, नदी, पहाड़ आदि।

(३) समूहवाचक—गिरोह, झुंड, सभा, कौंसिल, परिषद् आदि।

(४) द्रव्यवाचक—सोना, चाँदी, तेल, घी, पानी आदि।

(५) भाववाचक—बड़ाई, भलाई, क्षमा, दया, मृत्यु आदि।

व्यक्तिवाचक जातिवाचक के समान—कभी-कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा-शब्दों का प्रयोग जातिवाचक के रूप में भी होता है। जैसे, मुंगेर जिले में तीन 'श्रीकृष्ण' हैं। विमला हमारे घर की 'लक्ष्मी' है। गामा पहलवान कलियुग का 'भीम' है। इन वाक्यों में 'श्रीकृष्ण' 'लक्ष्मी' और 'भीम' का प्रयोग जातिवाचक के रूप में हुआ है।

**जातिवाचक व्यक्तिवाचक के समान**—इसी तरह कुछ जातिवाचक और समूहवाचक संज्ञा-शब्द व्यक्तिवाचक के रूप में भी

प्रयोग में आते हैं। जैसे, 'पुरी' (जगन्नाथपुरी), 'देवी' (दुर्गा
'पार्लमेंट' (इंगलैंड की कानून बनानेवाली सभा), 'कांग्रेस' (अखि
भारतीय राष्ट्रीय महासभा)। कुछ उपनाम सूचक शब्द—जैसे
'भारतेन्दु' (हरिश्चन्द्र कवि), 'गोसाईंजी' (गोस्वामी तुलसीदास
महात्माजी ( महात्मा गाँधी ), 'बापू' ( म० गाँधी )।

द्रव्यवाचक संज्ञा शब्दों का भी उस हालत में जातिवाचक
रूपमें प्रयोग होता है जब कि उनसे उनके भिन्न-भिन्न भेद, उन
खंड या उन द्रव्यों से बनी चीजों का बोध हो। जैसे; भारत
'सोना', मेरे 'टीन' में कपड़े हैं, उसने मेरा 'लोहा' मान लिया
यहाँ 'सोना,' 'टीन' और 'लोहा' जातिवाचक शब्द हैं।

जातिवाचक को छोड़कर शेष चारों किस्म की संज्ञाएँ सदा ए
वचन में आती हैं। मगर जब उनका प्रयोग बहुवचन में कि
जाता है तब वे जातिवाचक का रूप ले लेती हैं। जैसे; अने
'लड़ाइयों' के बाद देशमें शांति हुई। कुल 'आशाओं' पर पानी फि
गया। दोनों पक्षों की 'सेनाएँ' भिड़ गईं। यहाँ 'लड़ाई' और 'आश
भाववाचक के शब्द हैं और 'सेना' समूहवाचक के। लेकिन य
सबके सब जातिवाचक होकर आये हैं।

## संज्ञाओं का रूपांतर

### लिंग

घोड़ा चरता है। नरेन्द्र खेलता है।
माधुरी गाती है। विमला पढ़ती है।

This book belongs to Bharat...



ऊपर के वाक्यों में 'घोड़ा' और 'नरेन्द्र' पुरुष-जाति-बोधक शब्द हैं और 'माधुरी' तथा 'विमला' स्त्रीजाति-बोधक। लिंग का अर्थ है स्त्री-पुरुष की पहचान का चिह्न। इसलिए पुरुष-वाची शब्दों को व्याकरण में *पुंल्लिग* और स्त्रीवाची शब्दों को *स्त्रीलिंग* कहते हैं।

हिंदी व्याकरण में सभी शब्द इन्हीं दो लिंगों में विभक्त हैं। जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है वे पुंल्लिग हैं और जिन से स्त्री-जाति का बोध होता है वे स्त्रीलिंग हैं। मगर बहुतेरे ऐसे भी शब्द हैं जो न तो पुरुष जाति के बोधक हैं और न स्त्रीजाति के। ऐसे भ्रमात्मक शब्दों में से अनुमान के द्वारा कुछ को पुंल्लिग और कुछ को स्त्रीलिंग मान लिया गया है। यहाँ लिंगों की पहचान के विषय में कुछ मोटी-मोटी बातें नीचे दी जाती हैं।

*प्राणिवाचक संज्ञाओं के लिगों की पहचान—*

(१ जिन प्राणियों के जोड़े होते हैं, उनमें पुरुष को बतानेवाली संज्ञा पुंल्लिग होती है और स्त्री को बताने वाली स्त्रीलिंग—

| | |
|---|---|
| नर—नारी | घोड़ा—घोड़ी |
| देव—देवी | ऊँट—ऊँटनी |

(२) कुछ प्राणियों के जोड़े होने पर भी उनका बोध करानेवाली संज्ञाएँ पुंल्लिग हैं। जैसे—*चीलर, तीतर, पक्षी, कोकिल, पिल्लू, उल्लू, खटमल, कौआ* आदि,।

(३) *दम्पति, माता-पिता, राजा-रानी, बूढ़ा-बूढ़ी, कुत्ता-बिल्ली, बेटा-बेटी* आदि कुछ ऐसे समस्त शब्द हैं जो पुंल्लिग होते हैं।

(४) खीख, चील, कोयल, दीमक, चिड़िया, तितली, जोंक-प्राणी जोड़ेवाले हैं; पर इनकी ये संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं।

(५) नीचे लिखे प्राणियों के समूहवाचक नाम पुंल्लिंग हैं: संघ, दल, झुंड, मंडल, परिवार, कुटुम्ब, गिरोह, गुट्ट आदि।

किन्तु प्रजा, जनता, सरकार, सभा, संस्था, परिषद्, भीड़, मंडली, जाति आदि स्त्रीलिंग हैं।

(६) 'बुलबुल' —दोनों लिंगों में आता है।

*अप्राणिवाचक संज्ञाओं के लिंगों की पहचान—*

(७) अकारान्त और आकारान्त शब्द प्रायः पुंल्लिंग होते हैं। जैसे, जल, बाल, मुँह, कान, कीचड़, जाड़ा, पत्ता, पहिया, मेला।

किन्तु बाँस, आँच, कीच, बाँह, आँख, नाक, साँस, दाल, खटिया, डिबिया आदि शब्द स्त्रीलिंग हैं।

(८) त्व, आव, पन, पना और पा—ये चिह्न जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में हों, वे पुंल्लिंग होती हैं। जैसे—पुरुषत्व, चढ़ाव, लड़कपन, गुंडपना, बुढ़ापा आदि।

(९) पहाड़ों, महीनों, ग्रहों, दिनों, रत्नों और धातुओं के नाम प्रायः पुंल्लिंग होते हैं। जैसेः—मन्दार, सूर्य, श्रावण, हीरा, मोती, सोना, ताँबा, सोमवार, मंगल, शनि।

किन्तु धातु, चांदी, मणि स्त्रीलिंग हैं।

(१०) खेत में उपजनेवाली वस्तुओं के नाम प्रायः पुंल्लिंग होते हैं। जैसे—गेहूँ, चना, मटर, जौ, मसूर, धान, चावल, उरद, तिल, मक्का, गन्ना, ऊख, गुड़ आदि।

किन्तु दाल, अरहर, मूँग, मक्ई, शक्कर, ईख आदि स्त्रीलिंग हैं।

(११) फारसी और अरबी के जिन शब्दों के अन्त में आब, आर, न तथा आ लगे रहते हैं, वे पुंल्लिंग होते हैं जैसे—हिसाब, गुलाब, कार, मकान, एहसान, गुस्सा, किस्सा, चश्मा आदि।

किन्तु किताब, शराब, दूकान, तकरार, दफा आदि स्त्रीलिंग हैं।

(१२) तत्सम आकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—ता, माला, आशा, दया, कृपा, आज्ञा आदि।

किन्तु तारा, देवता हिन्दी में पुंल्लिंग हैं।

(१३) ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—धोती, पोथी, पी, छड़ी, गोष्ठी, नदी, हवेली आदि।

किन्तु मोती, घी, पानी, दही, जी आदि पुंल्लिंग हैं।

(१४) तत्सम उकारान्त तथा तद्भव उकारान्त शब्द प्रायः ीलिंग होते हैं; जैसे—रेणु, मृत्यु, रज्जु, लू, दारू, झाड़ू आदि। न्तु आलु, आँसू आदि पुंल्लिंग हैं।

(१५) तकारन्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—रात, छत, लत, नौबत, किस्मत, लात, जात, ताँत, बात, जोत आदि।

किन्तु भात, गात, खेत, दांत, भूत आदि पुंल्लिंग हैं।

(१६) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त से ता, आई, वट और हट चिह्न हों, वे स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे—वीरता, पशुता, भद्रता, सफ़ाई, लड़ाई, थकावट, बनावट, सजावट, चिकनाहट आदि।

(१७) तिथियों, नदियों और नक्षत्रों के नाम प्राय: स्त्रीलिंग हैं। जैसे—*परिवा*, *दूज*, *गंगा*, *यमुना*, *अश्वनी*, *भरनी* आदि।

किन्तु *पुष्य*, *पूर्वाषाढ़*, *उत्तराषाढ़*, *हस्त*, *मूल* आदि पुंल्लिंग

(१८) फारसी-अरबी के शकारान्त और आकारान्त शब्द प्रा स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—*कोशिश*, *लाश*, *तलाश*, *दवा*, *हवा*, आदि। किन्तु *ताश*, *होश*, *दगा* आदि पुंल्लिंग हैं:—

पुंल्लिंग शब्दों के बाद *आ*, *ई*, *आनी*, *आइन*, *इन*, *इया*—शब्दांशों को जोड़कर प्राय: स्त्रीलिंग शब्द बनाये जाते हैं।

## पुंल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाये गये कुछ शब्द

| पुंल्लिंग | | स्त्रीलिंग | पुंल्लिंग | | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|---|---|---|
| बालक | आ | बालिका | चौबे | आइन | चौबाइन |
| गायक | " | गायिका | ओझा | " | ओझाइन |
| कुमार | ई | कुमारी | मिसिर | " | मिसराइन |
| किशोर | " | किशोरी | बाबू | " | बबुआइन |
| मामा | " | मामी | पाँडे | " | पँड़ाइन |
| नट | " | नटी | भव | आनी | भवानी |
| मृग | " | मृगी | इन्द्र | " | इन्द्रानी |
| ब्राह्मण | " | ब्राह्मणी | दुबे | " | दुबानी |
| घोड़ा | " | घोड़ी | तेली | इन | तेलिन |
| नाना | " | नानी | सोनार | " | सोनारिन |
| | | लोहार | इन | | लोहारिन |
| | | धोबी | " | | धोबिन |

| पुंल्लिग | | स्त्रीलिंग |
|---|---|---|
| ग्वाला | " | ग्वालिन |
| लोटा | इया | लुटिया |
| खाट | " | खटिया |
| डिब्बा | " | डिबिया |

कुछ पुंल्लिग शब्दों के रूप स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं:—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पिता | माता | राजा | रानी |
| पुरुष | स्त्री | भाई | भाभी |
| बैल | गाय | देवता | देवी |

### अभ्यास

१. लिंग किसे कहते हैं? २. प्राणिवाचक संज्ञा शब्दों के लिंग कैसे पहचानोगे? ३. नीचे लिखे शब्दों के लिंग बताओ:—चीलर, ...खी, कौवा, लीख, चील, कोयल, चिड़िया, दल, मण्डल, परिवार, सरकार, भीड़, कीचड़, कीच, डिबिया, पहाड़, सूर्य, मोती, चाँदी, मूँग, शराब, तारा, उषा, दही, छत, लात, बनावट, लू, आँसू, वायु, ...श, होश, दगा, गन्ध।

## वचन

शब्दों के उस स्वरूप को वचन कहते हैं जिससे उनके एक या अनेक होने का बोध हो। जहाँ एक का बोध हो वहाँ एकवचन और जहाँ अनेक का बोध हो वहाँ बहुवचन होता है। जैसे; लड़का आया, लड़के आये। यहाँ पहले वाक्य में 'लड़का' एक के लिए आया है, इसलिये वह एकवचन है और दूसरे वाक्य में 'लड़के'

अनेक लड़कों के लिए आये हैं; इसलिए वह बहुवचन है।

साधारणतः एकवचन का बोध कराने वाले शब्दों के अंति स्वर को ए, एँ, ओ, ओं, याँ और यों कर देने से या उनके आ इन्हीं शब्दांशों को जोड़ देने से बहुवचन बनाया जाता है। जैसे लड़ लड़के-लड़कों। लड़की-लड़कियाँ-लड़कियों आदि।

कहीं-कही वर्ग, गण, लोग, वृंद आदि शब्दों को एकवचन साथ जोड़कर भी बहुवचन शब्द बना लिये जाते हैं। जैसे; बालव शिशुगण, आपलोग, सज्जन-वृंद आदि।

दाँत, प्राण, दर्शन, होश, लोग, ओठ आदि कुछ ऐसे शब्द जो सदा बहुवचन में आते हैं।

### अभ्यास

१. वचन से क्या समझते हो ? ईश्वर, प्राण, होश, नारंगि और दाँत—इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो।

## कारक

### प्रभा ने कलम से भाई को पत्र लिखा।

उपर्युक्त वाक्य में '*लिखा*'—इस क्रिया को *प्रभा*, *कलम*, *भाई* *पत्र*—इन संज्ञाओं ने अपने भिन्न-भिन्न संबन्धों से पूर्ण किया है संज्ञा या सर्वनाम के ऐसे रूप को, जिससे वाक्य में उसका संब क्रिया के साथ जाना जाय, कारक कहते हैं।

कारक छः प्रकार के होते हैं। कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपाद और अधिकरण।

(१) कर्त्ता—क्रिया का व्यापार करनेवाले को *कर्त्ता* कहते हैं। से—*राम* हँसता है। *श्याम* ने पढ़ा।

(२) कर्म—जिसपर क्रिया का फल या प्रभाव पड़ता है, उसे र्म कहते हैं। जैसे—मोहन बुद्धू को पीटता है। मैं *आम* खाता हूँ।

(३) करण—जिसके द्वारा क्रिया की जाती है उसे *करण* कहते से—किसान कु*दाल* से कोड़ता है।

(४) सम्प्रदान—जिसके लिए क्रिया की जात है, उसे म्प्रदान कहते हैं। जैसे—वह पैसे के *लिए* तरसता है।

(५) अपादान—जिससे किसी वस्तु का पृथकत्व या जुदाई ान पड़े, उसे *अपादान* कहते हैं! जैसे—पेड़ से पत्ता गिरता है। मैं र से आता हूँ।

(६) अधिकरण—जो क्रिया का आधार हो उसे *अधिकरण* कहते हैं। जैसे—पेड़ *पर* कोयल कूकती है।

इनके अतिरिक्त हिंदी भाषा में दो और कारक हैं—संबंध और संबोधन।

( ७ ) संबंध—संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी दूसरे शब्द के साथ संबंध या लगाव जान पड़े उसे संबंध कारक कहते हैं। जैसे; *रामका* घोड़ा चरता है।

( ८ ) संबोधन—जिससे किसी का ध्यान अपनी ओर

आकृष्ट करने के लिए पुकारने या चेताने का बोध होता है,
संबोधन कहते हैं। जैसे; *अरे भाई*, उधर मत जाओ!

वाक्य में कारकों की स्थिति बताने के लिए उनके साथ प्रायः
न कोई प्रत्यय जोड़ा जाता है, जिसे *विभक्ति* कहते हैं। विभक्तियों
जुटने से कारकों के रूप में प्रायः विकार उत्पन्न हो जाता है। स
कारकों की अपनी-अपनी विभक्तियाँ होती हैं।

कर्त्ता—वाक्य में कर्त्ता कारक बिना विभक्ति के भी प्रयुक्त हो
है और ने तथा से विभक्तियों के साथ भी जैसे; राम खाता
राम ने खाया, राम से खाया जाता है।

कर्म—कर्म कारक बिना विभक्ति के भी आता है और *को* विभ
के साथ भी। जैसे; राम *आम* खाता है, राम मोहन *को* बुलाता है।

अन्य कारकों की विभक्तियाँ नीचे दी जाती हैं:—करण—
संप्रदान—को या के *लिये*। अपादान—से। संबंध—*का*, के,
अधिकरण—*में* या *पर*।

संबोधन के साथ उसके पहले ही हे, हो, रे, अरे, आदि शब्द
जोड़े जाते हैं। सर्वनाम-सूचक संबंध कारक के साथ *रा*, *रे*,
विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं।

## अभ्यास—

१. कारक से क्या समझते हो? २. कुल कारकों की अलग-अल
विभक्तियाँ बताओ। ३. एक ऐसा वाक्य बनाओ जिसमें विभ
युक्त छः कारक आये हों।

## संज्ञा शब्दों के रूप

पहले कहा जा चुका है कि संज्ञा के रूप, उसके लिंग, वचन और कारकों के कारण बदलते हैं। इसीका नाम शब्द-रूपावली है। इसके कुछ नियम नीचे दिये जाते हैं:—

(१) प्राय: अधिकांश आकारांत तद्भव संज्ञाओं के एकवचन में कारक की विभक्तियाँ लगाने से, उनके अन्त्यस्वर का ए हो जाता है।

लेकिन तत्सम आकारांत शब्द, कुछ स्थान और संबंध-बोधक आकारांत शब्द तथा कुछ अरबी फारसी के आकारांत शब्द इस नियम के अपवाद हैं। जैसे;

तत्सम शब्द—माता, पिता, राजा, सभा, माला, दया आदि।

स्थानबोधक शब्द—गया, एशिया, मथुरा, अयोध्या आदि।

संबंधबोधक शब्द—दादा, नाना, मामा, काका आदि।

अरबी-फारसी के शब्द—हवा, दगा, सजा आदि।

(२) जो आकारान्त पुंल्लिंग संज्ञाएँ, कारक की विभक्तियों को लगाने से, एकवचन में एकारांत हो जाती हैं, वे सभी विभक्ति रहित बहुवचन में भी इसी तरह विकृत होती हैं; और जो एक वचन में विकृत नहीं होतीं, वे बहुवचन में भी उसी तरह रह जाती हैं। जैसे;

| एकवचन | विभक्तियुक्त एकवचन | विभक्तिरहित बहुवचन |
|---|---|---|
| घोड़ा | घोड़े ने | घोड़े |
| राजा | राजा ने | राजा |

(३) आकारांत शब्दों को छोड़कर अन्य सभी पुंल्लिंग तथा स्त्रीलिंग संज्ञाएँ एकवचन में अविकृत रहती हैं, चाहे उनके साथ विभक्तियाँ रहें या नहीं। जैसे; माली—माली ने; लड़की—लड़की ने।

(४) सभी संज्ञाओं के, चाहे वे स्त्रीलिंग हों या पुंल्लिंग, विभक्तियुक्त बहुवचन का प्रत्यय ओं है; केवल संबोधन कारक में 'ओं' का अनुस्वार उड़ जाता है।

नीचे कुछ शब्दों के रूप कर्त्ता, कर्म, करण और संबोधन कारक में दिखाये गये हैं। शेष कारकों में उनके रूप अपनी-अपनी विभक्तियों के साथ करण कारक के रूपों की ही तरह होते हैं।

## पुंल्लिग संज्ञाएँ

### *अकारान्त किसान शब्द*

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | किसान, किसान ने | किसान, किसानों ने |
| कर्म | किसान, किसान को | किसान या किसानों को |
| करण | किसान से | किसानों से |
| सम्बोधन | किसान ! | हे किसानो ! |

[ सभी अकरान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं। ]

### आकारान्त ( घोड़ा ) शब्द

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | घोड़ा, घोड़े ने | घोड़े, घोड़ों ने |
| कर्म | घोड़ा, घोड़े को | घोड़ा, घोड़ों को |
| करण | घोड़े से | घोड़ों से |
| सम्बोधन | हे घोड़े | हे घोड़ो ! |

[ प्राय सभी तद्भव आकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इसी तरह होते हैं। ]

### आकारान्त ( राजा ) शब्द

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | राजा, राजा ने | राजा, राजाओं ने |
| कर्म | राजा, राजा को | राजा, राजाओं को |
| करण | राजा से | राजाओं से |
| सम्बोधन | हे राजा ! | हे राजाओ ! |

[ सभी तत्सम आकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

### इकारान्त 'कवि' शब्द

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | कवि, कवि ने | कवि, कवियों ने |
| कर्म | कवि, कवि को | कवि, कवियों को |
| करण | कवि से | कवियों से |
| सम्बोधन | हे कवि ! | हे कवियो ! |

[ सभी इकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

*ईकारान्त—माली*

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | माली, माली ने | माली, मालियों ने |
| कर्म | माली, माली को | माली, मालियों को |
| करण | माली से | मालियों से |
| सम्बोधन | हे माली ! | हे मालियो ! |

[ सभी ईकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

*उकारान्त 'गुरु' शब्द*

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | गुरु, गुरु ने | गुरु, गुरुओं ने |
| कर्म | गुरु को | गुरु, गुरुओं को |
| करण | गुरु से, | गुरुओं से |
| सम्बोधन | हे गुरु ! | हे गुरुओ ! |

[ सभी उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

*ऊकारान्त ( डाकू ) शब्द*

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | डाकू, डाकू ने | डाकू, डाकुओं ने |
| कर्म | डाकू, डाकू को | डाकू, डाकुओं को |
| करण | डाकू से | डाकुओं से |
| सम्बोधन | हे डाकू ! | हे डाकुओ ! |

[ सभी ऊकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

*एकारान्त—चौबे*

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | चौबे, चौबे ने | चौबे, चौबेओं ने |

| | | |
|---|---|---|
| र्म | चौबे, चौबे को | चौबेओं को |
| रण | चौबे से | चौबेओं से |
| म्बोधन | हे चौबे ! | हे चौबेओ ! |

[ सभी एकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

## स्त्रीलिंग संज्ञाएँ

### अकारान्त ( बहन ) शब्द

| | | |
|---|---|---|
| र्त्ता | बहन, बहन ने | बहनें, बहनों ने |
| र्म | बहन, बहन को | बहनें, बहनों को |
| रण | बहन से | बहनों से |
| म्बोधन | हे बहन ! | हे बहनो ! |

[ सभी अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

### आकारान्त 'चिड़िया' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| र्त्ता | चिड़या, चिड़िये ने | चिड़ियाँ, चिड़ियों ने |
| र्म | ,, चिड़ियों को | ,, चिड़ियों को |
| रण | चिड़िये से | चिड़ियों से |
| म्बोधन | हे चिड़िये ! | हे चिड़िओ ! |

[ प्रायः सभी तद्भव आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

### आकारान्त 'माता' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| र्त्ता | माता, माता ने | माताएँ, माताओं ने |
| र्म | माता. माता को | माताएं, माताओं को |
| रण | माता से | माताओं से |
| म्बोधन | हे माता ! | हे माताओ ! |

[ सभी तत्सम आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

इकारान्त—तिथि

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | तिथि, तिथि ने | तिथियाँ, तिथियों ने |
| कर्म | तिथि, तिथि को | तिथियाँ, तिथियों को |
| करण | तिथि से | तिथियों से |
| सम्बोधन | हे तिथि ! | हे तिथियो ! |

[ सभी इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

ईकारान्त 'घोड़ी' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | घोड़ी, घोड़ी ने | घोड़ियाँ, घोड़ियों |
| कर्म | घोड़ी, घोड़ी को | घोड़ियाँ, घोड़ियों |
| करण | घोड़ी से | घोड़ियों से |
| सम्बोधन | हे घोड़ी ! | हे घोड़ियो ! |

[ सभी ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

उकारान्त 'वस्तु' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | वस्तु, वस्तु ने | वस्तुएँ, वस्तुओं |
| कर्म | वस्तु, वस्तु को | वस्तुएँ, वस्तुओं |
| करण | वस्तु से | वस्तुओं से |
| सम्बोधन | हे वस्तु ! | हे वस्तुओ ! |

[ सभी उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ]

ऊकारान्त 'बहू' शब्द

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | बहू, बहू ने | बहुएँ, बहुओं ने |

| | | |
|---|---|---|
| कर्म | वहू, वहू को | वहू, वहुओं को |
| करण | वहू से | बहुओं से |
| सम्बोधन | हे वहू ! | हे वहुओ ! |

## सर्वनाम

सर्वनाम का अर्थ है सबका नाम अर्थात् जो शब्द सब संज्ञाओं के बदले में आते हैं वे सर्वनाम कहलाते हैं।

'मोहन आया और मोहन ने कहा कि मोहन को प्यास लगी है' —इस वाक्य में 'मोहन' शब्द का प्रयोग कई बार होने से वाक्य भद्दा मालूम पड़ता है। इस भद्दापन को दूर करने तथा वाक्य को सुन्दर बनाने के लिए 'मोहन' शब्द का कई बार प्रयोग नहीं कर उसके बदले में सर्वनामों का प्रयोग करते हैं। जैसे—'मोहन आया और उसने कहा कि मुझे प्यास लगी है।' यहाँ 'उसने' और 'मुझे' शब्द मोहन के बदले में आये हैं और सर्वनाम हैं।

मैं, तू, आप, यह, वह, सब, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या— ये बारह शब्द सर्वनाम हैं जो आवश्यकतानुसार कुल संज्ञाओं के बदले में आते हैं। व्याकरण में इन बारहों के छः भेद कर दिये गये हैं:— (१) पुरुषवाचक, (२) निश्चयवाचक, (३) अनिश्चयवाचक (४) संबंधवाचक (५) निजवाचक और (६) प्रश्नवाचक।

**पुरुषवाचक**—वे हैं जिनसे किसी कहनेवाले, सुननेवाले या जिसके विषय में कुछ कहा जाय उसका बोध होता है। इसके तीन भेद हैं—(क) उत्तमपुरुष, (ख) मध्यमपुरुष और (ग) अन्यपुरुष।

जो सर्वनाम बोलने वाले का बोध कराता है वह उत्तमपुरुष जो सुनने वाले का बोध कराता है वह मध्यमपुरुष है और जि विषय में कुछ कहा जाता है वह अन्यपुरुष है। जैसे—

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
| --- | --- | --- |
| उत्तमपुरुष | मैं | हम |
| मध्यमपुरुष | तू | तुम |
| अन्यपुरुष | वह, यह | वे, ये |

**निश्चयवाचक**— जो सर्वनाम निकट या दूर की निश्चित वस्तु का बोध कराता है। जैसे; यह-ये, वह-वे, इनमें ये निकट की निश्चित वस्तु का और वह-वे दूर की निश्चित का बोध कराते हैं।

**अनिश्चयवाचक**—जिस सर्वनाम से किसी अनिश्चित का बोध नहीं होता है। जैसे; कोई, कुछ।

**सम्बन्धवाचक**—जिस सर्वनाम से किसी संज्ञा या सर्वनाम का संबंध प्रगट होता है। जैसे, जो। यह सर्वनाम नित्यसंबंधी निश्चयवाचक 'सो' या 'वह' के साथ प्रयुक्त होता जैसे; जो पढ़ेगा, सो (वह) पास करेगा।

**प्रश्नवाचक**— जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध होता जैसे; कौन, क्या। 'कौन' प्राणियों के लिए, विशेषकर मनुष्यों लिए तथा 'क्या' छोटे-छोटे जीवों या जड़ वस्तुओं के लिए आता

निजवाचक—जिस सर्वनाम से निज का बोध हो। जैसे,
आप।

विशेष—निजवाचक सर्वनाम 'आप' शब्द को आदरवाचक
कहा जाता है। ऐसी अवस्था में इसके साथ बहुवचन क्रिया
जोड़ी जाती है और यह शब्द मध्यम और अन्यपुरुष में व्यवहृत
होता है। किन्तु निजवाचक रहने पर तीनों पुरुषों में बोला जाता है।
जैसे—

### आदरवाचक

मध्यमपुरुष—बाबू साहब! आप यह बैठिये।

अन्यपुरुष—राम ने श्याम से आगन्तुक के लिए पूछा—आपका
परिचय?

### निजवाचक

अन्य पु०—मोहन आप ही खायगा, तंग मत करो।

म० पु०—तुम आपही रोटियाँ सेंक लो।

उ० पु०—आप हो हारमोनियम बजाना सीख गया।

## सर्वनामों के रूप

[ सर्वनामों का संबोधन नहीं होता ]

### मैं ( उत्तमपुरुष )

| | |
|---|---|
| मैं, मैंने | हम, हमने |
| मुझको, मुझे | हमको, हमें |

| | | |
|---|---|---|
| करण | मुझसे | हमसे |
| सम्प्रदान | मेरे लिए, मुझको, मुझे | हमारे लिए, हम |
| अपादान | मुझसे | हमसे |
| सम्बन्ध | मेरा, मेरी, मेरे | हमारा, हमारी, |
| अधिकरण | मुझमें, मुझपर | हममें, हमपर |

तू ( मध्यमपुरुष )

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | तू, तूने | तुम, तुमने |
| कर्म | तुझको, तुझे | तुमको, तुम्हें |
| करण | तुझसे | तुमसे |
| सम्प्रदान | तेरे लिए, तुझको, तुझे | तुम्हारे लिए, तुम |
| अपादान | तुझसे | तुमसे |
| सम्बन्ध | तेरा, तेरी, तेरे | तुम्हारा, तुम्हारी, |
| अधिकरण | तुझमें, तुझपर | तुममें, तुमपर |

वह ( अन्यपुरुष )

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | वह, उसने | वे, उन्होंने |
| कर्म | उसको, उसे | उनको, उन्हें |
| करण | उससे | उनसे |
| सम्प्रदान | उसके लिए, उसको, उसे | उनके लिए, उनक |
| अपादान | उससे | उनसे |
| सम्बन्ध | उसका, उसकी, उसके | उनका, उनकी, |
| अधिकरण | उसमें, उसपर | उनमें, उनपर |

## यह ( निश्चयवाचक )

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| | यह, इसने | ये, इन्होंने, इनने |
| | इसको, इसे | इनको, इन्हें |
| | इससे | इनसे |
| दान | इसके लिए, इसको, इसे | इनके लिए, इनको, इन्हें |
| दान | इससे | इनसे |
| न्ध | इसका, के, की | इनका, के, की |
| करण | इसमें, इसपर | इनमें, इनपर |

## कोई ( अनिश्चयवाचक )

| | |
|---|---|
| | कोई, किसीने |
| | किसी को |
| | किसीसे |
| दान | किसी के लिए, किसीको |
| दान | किसी से |
| न्ध | किसीका, किसीकी |
| करण | किसी में, किसीपर, |

[ 'कोई' शब्द का बहुवचन नहीं होता ]

## जो ( सम्बन्धवाचक )

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| जो, जिसने | जो, जिन्होंने |

| | | |
|---|---|---|
| कर्म | जिसको, जिसे | जिनको, जिन्हें |
| करण | जिससे | जिनसे |
| सम्प्रदान | जिसके लिए, जिसको, जिसे. | जिनके लिए, जिनको, |
| अपादान | जिससे | जिनसे |
| सम्बन्ध | जिसका, के, की | जिनका, के, की |
| अधिकरण | जिसमें, जिस पर | जिनमें, जिन पर |
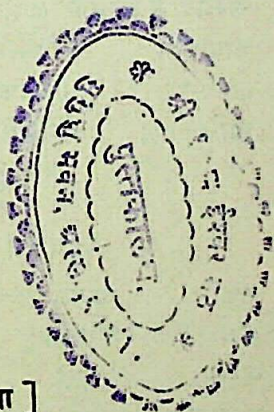
## कौन (प्रश्नवाचक)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | कौन, किसने | कौन, किन्होंने |
| कर्म | किसको, किसे | किनको, किन्हें |
| करण | किससे, | किनसे |
| सम्प्रदान | किसके लिए, किसको, किसे | किनके लिए, किनको, |
| अपादान | किससे | किनसे |
| सम्बन्ध | किसका, के. की | किनका, के, की |
| अधिकरण | किसमें, किस पर | किनमें, किन पर |

## आप (आदरवाचक)

| | बहुवचन | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | आप, आपने | इसका एकवचन नहीं है |
| कर्म | आपको | |
| करण | आपसे | |
| सम्प्रदान | आपके लिए, अपको | |
| अपादान | आपसे | |
| सम्बन्ध | आपका, आपके, आपकी | |
| अधिकरण | आपमें, आपपर | |

'आप' के साथ 'लोग' शब्द जोड़कर भी बहुवचन बनाने की ाल है। जैसे—आपलोग, आपलोगों ने, आपलोगों को इत्यादि। ,निजवाचक ( आप ) शब्द अव्यय के समान व्यवहृत होता है। अर्थात् इसमें कोई परिवर्त्तन नहीं होता।

अपना ( निजवाचक ) शब्द के केवल नीचे लिखे रूप मिलते हैं:—

| | एकवचन |
|---|---|
| कर्त्ता | ० |
| कर्म | अपने को |
| करण | अपने से |
| सम्प्रदान | अपने लिए, अपने को |
| अपादान | अपने से |
| सम्बन्ध | अपना, अपने, अपनी, |
| अधिकरण | अपने में, अपने पर |

## अभ्यास

१. सर्वनाम के कितने भेद होते हैं ? २. पुरुषवाचक सर्वनाम से क्या समझते हो ? ३. अनिश्चयवाचक और प्रश्नवाचक में क्या अन्तर पाते हो ? ४. निजवाचक और आदर-वाचक 'आप' शब्द में व्यवहार द्वारा भेद दिखाओ। ५. 'अपना' कैसा सर्वनाम है ?

# विशेषण

**विशेषण**—संज्ञा के रूप, रंग, गुण, दोष, स्थिति, दशा, संख्या आदि विशेषताओं को बतलाने वाले शब्द *विशेषण* कहलाते हैं। जैसे; सुशील बालक, काली गाय।

**विशेष्य**—विशेषण जिस संज्ञा की विशेषता बतलाता है उसे *विशेष्य* कहते हैं। जैसे; 'सुशील बालक' में 'सुशील' विशेषण और 'बालक' विशेष्य है।

**विशेषण का प्रयोग**—विशेषण का प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार से होता है। जब विशेष्य के साथ विशेषण का प्रयोग होता है तब उसे *विशेष्य-विशेषण* कहते हैं और जब क्रिया के साथ विशेषण आता है तब उसे विधेय-विशेषण कहते हैं। जैसे; 'सुशील' बालक में 'सुशील' विशेष्य-विशेषण और वह बालक 'सुशील' है—इस वाक्य में 'सुशील' विधेय-विशेषण है।

**विशेषण के भेद**—विशेषण के मुख्यतः चार भेद हैं:—
(१) गुणवाचक (२) संख्यावाचक, (३) परिमाणवाचक और (४) सार्वनामिक विशेषण।

**गुणवाचक**—जिस विशेषण से संज्ञा के गुण, अवस्था, रंग, आकार-प्रकार आदि का बोध होता है। जैसे; भला, नया, लाल, लंबा आदि।

**संख्यावाचक**—जिससे संज्ञा के निश्चित या अनिश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे; निश्चित संख्या—'दो' लड़के, 'पौन' रुपया। अनिश्चित संख्या—'अनेक' आदमी।

**परिमाणवाचक**—जब अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण संख्या का बोध नहीं होकर वस्तु के नाप, तौल, या परिमाण का ध होता है तब वह परिमाणवाचक हो जाता है। परिमाण-वाचक य: एकवचन संज्ञा के साथ आता है। जैसे; बहुत 'धन', 'थोड़ा' 'कितना' आटा आदि।

**सार्वनामिक विशेषण**—जब सर्वनाम अपनी संज्ञाओं के थ आते हैं तब वे सार्वनामिक विशेषण हो जाते हैं। जैसे; 'वह' दमी कहाँ आया है? 'इस' घर में कौन रहता है?

**विशेषण का रूपांतर**—विशेषण के वही लिंग, वचन और रक होते हैं जो उसके विशेष्य के होते हैं।

(१) स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ आकारांत विशेषण इकारांत जाता है। जैसे; 'काला' बैल, 'काली' गाय।

(२) विभक्तियुत पुंल्लिग या बहुवचन विशेष्य के साथ कारांत विशेषण एकारांत हो जाता है। जैसे; 'अच्छे' लड़के, ऊँचे' घोड़े पर।

(३) जब विशेषणों का प्रयोग संज्ञा की तरह होता है तभी के साथ विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं, अन्यथा नहीं। जैसे; 'बड़ों की' त मानो।

## अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों में विशेषणों को चुन कर उनके भेद ाओ—सब धन नष्ट हो गया। सब लड़के भाग गये। तीसरी क्त में बैठो। वह लड़का जा रहा है। पूरे ताव कितने हैं?

२. इन्हें संज्ञा रूप में वाक्यों में व्यवहृत करो—ज्ञानी, दु
निर्धन।

३. इन्हें विधेय-विशेषणों के रूप में व्यव_त करो—सुशं
लाल, गरीब।

## क्रिया

खाना, जाना, देखना, सुनना आदि शब्दों से काम करने
होने का बोध होता है इसलिए ये शब्द क्रिया हैं। इनमें क्रम
खा, जा, देख, सुन—ये क्रिया के मूल रूप हैं और इनमें लिंग, वच
आदि के कारण कोई विकार नहीं होता। अतः जिस मूल शब्द
क्रिया बनती है उसे धातु कहते हैं और धातु के अन्त में
जोड़ने से जो शब्द बनता है उसे क्रिया का साधारण रूप कहते
जैसे; खा + ना = खाना ; जा + ना = जाना ; देख + ना = देखना
सुन + ना = सुनना।

क्रिया के साधारण रूप का प्रयोग प्रायः संज्ञा के रूप में भी हो
है और तब वह क्रिया क्रियार्थक संज्ञा कहलाती है। जैसे ; 'टहल
स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

कुछ धातुओं का प्रयोग कभी-कभी भाववाचक संज्ञा के सम
भी होता है। जैसे ' राम 'खेल' देखता है।

क्रिया के भेद—

बच्चा खेलता है । घोड़े दौड़ते हैं। तुम रोते हो।
मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। ललिता मिठाई खाती है।

ऊपर के वाक्यों में *खेलता हैं*, *दौड़ते हैं* और *रोते हो*—ये क्रियाएँ विना कर्म के ही पूर्ण हुई हैं और *पढ़ता है खाता है*—ये क्रियाएँ कोई-न-कोई कर्म लेने पर ही पूर्ण हुई हैं। इस प्रकार क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं :—सकर्मक और अकर्मक।

**अकर्मक**——जिस क्रिया का व्यापार और फल अलग-अलग कारकों पर न पड़कर केवल कर्त्ता पर ही पड़े उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—*खेलना*, *दौड़ना* और *रोना* क्रियाओं के व्यापार करनेवाले तथा फल भोगनेवाले क्रमशः बच्चा, घोड़े और तुम—ये कर्त्ता ही हैं। अतः—

जो क्रिया विना कर्म के ही पूर्ण हो जाती है उसे अकर्मक कहते हैं।

**सकर्मक**——जिस क्रिया का व्यापार और फल कर्म पर पड़े उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—*पढ़ना* और *खाना* क्रियाओं के व्यापार करनेवाले क्रमशः मैं और *ललिता*—ये कर्त्ता हैं किन्तु, फल क्रमशः पुस्तक और *मिठाई* पर पड़ते हैं। अतः—

जो क्रिया विना कर्म के पूर्ण नहीं हो सकती, उसे सकर्मक कहते हैं।

**सकर्मक और अकर्मक की पहचान**— साधारणतः सकर्मक और अकर्मक क्रिया को पहचानने का तरीका यह है कि जिस 'क्रिया' के पहले 'क्या' या 'किसको' शब्द जोड़कर प्रश्न करने से अगर कुछ

उत्तर आवे उसे सकर्मक और अगर कुछ उत्तर न आवे तो उसे अकर्मक समझना चाहिए।

**द्विकर्मक क्रिया**— कुछ ऐसी क्रियाएँ हैं जो अपना अर्थ पूरा करने के लिए दो कर्म लेती हैं। ऐसी क्रियाएँ द्विकर्मक कहलाती हैं। जैसे; राम ने श्याम को यह विधि बताई है—इस वाक्य में 'बताई है' क्रिया दो कर्म 'श्याम को' और 'विधि' के साथ आई है। पहला कर्म 'विधि' वस्तुबोधक है और मुख्य कर्म कहलाता है। दूसरा कर्म 'श्याम को' प्राणिबोधक है और गौणकर्म कहलाता है। देना, कहना, सिखाना, बताना आदि क्रियाएँ द्विकर्मक हैं।

## काल

श्याम गया। श्याम जाता है। श्याम जायगा।

ऊपर के वाक्यों की क्रियाओं से पता चलता है कि काम किसी न किसी समय या काल में होता है। पहले वाक्य की क्रिया बीते हुए काल में हुई है। दूसरे की क्रिया वर्त्तमान काल में हो रही है और तीसरे की क्रिया भविष्य में होने को बाकी है। इस प्रकार क्रिया के तीन काल होते हैं :—

१. **भूतकाल**—जिससे बीते हुए समय का बोध हो। जैसे; श्याम गया।

२. **वर्तमानकाल**— जो आरम्भ हो गया है पर उसकी समाप्ति नहीं हुई है। जैसे; श्याम जाता है।

३. भविष्यत्काल—जो क्रिया आनेवाले समय में होने को हो। जैसे; श्याम जायगा।

## भूतकाल के भेद

राम बोला। श्याम बोला है। मोहन बोला था। गिरीश बोलता था। नरेश बोला होगा। सुशील बोलता तो इनाम पाता। इन वाक्यों की सभी क्रियाएँ बीते हुए समय का बोध करा रही हैं, पर अवस्था के भेद से छः भागों में बँटी हुई हैं। अतः भूतकाल के छः भेद हुए हैं:—

(१) सामान्यभूत— जिस भूतकाल की क्रिया से सामान्यता समझी जाय, विशेषता नहीं। जैसे; राम 'बोला'।

(२) आसन्नभूत—जो भूतकाल की क्रिया कुछ ही पहले समाप्त हुई है। जैसे; श्याम 'बोला है'।

(३) पूर्णभूत— जिस भूतकाल की क्रिया से काम की पूर्णता ज्ञात होती है। जैसे; गिरीश 'बोलता था'।

(४) अपूर्णभूत— जिस भूतकाल की क्रिया से काम की अपूर्णता सिद्ध होती है। जैसे, मोहन 'बोला था'।

(५) सन्दिग्धभूत—जिस भूतकाल की क्रिया के पूर्ण होने में सन्देह मालूम होता है। जैसे; नरेश 'बोला होगा'।

(६) हेतुहेतुमद्भूत— जिस भूतकाल की क्रिया हेतु बन दूसरी क्रिया की संभावना बतलाती है। जैसे; सुशील 'बोलता' ईनाम 'पाता'।

## वर्त्तमान काल के भेद

श्याम बोलता है। श्याम बोल रहा है। श्याम बोलता होगा।

ऊपर के वाक्यों में सभी क्रियाएँ वर्त्तमान काल की हैं; व्यवहार में तीन प्रकार की ही हैं। अतः—

*वर्त्तमान काल के तीन भेद होते हैं।*

(१) सामान्य वर्त्तमान—जिस वर्त्तमान काल की क्रिया में को विशेषता न हो। जैसे; श्याम 'बोलता है'।

(२) तात्कालिक वर्त्तमान—जिस वर्त्तमान काल की क्रिया उसी क्षण होते रहना मालूम हो। जैसे; श्याम 'बोल रहा है'।

(३) संदिग्ध वर्त्तमान—जिस वर्त्तमान काल की क्रिया के हो में संदेह मालूम हो। जैसे; श्याम 'बोलता होगा'।

## भविष्यत् काल के भेद

विमला गावेगी। अनसूया लिखे, तो राम आ सकता है।

इन वाक्यों में 'गाने' और 'लिखने' का काम भविष्य में हो को है। पर पहले के होने में सामान्यता पायी जाती है और दूस के होने में सम्भावना। अतः—

भविष्यत् काल के दो भेद होते हैं।

(१) सामान्य भविष्यत्—जिस भविष्यत् काल की क्रिया में कोई विशेषता न हो। जैसे; विमला 'गावेगी'।

(२) संभाव्य भविष्यत्—जिस भविष्यत् काल की क्रिया में काम होने की इच्छामात्र ज्ञात होती है। जैसे; अनसूया लिखे, तो राम आ सकता है।

## विधि क्रिया

शान्ति पढ़े। मैं लिखूँ। तू खेल। किसान जीवें।

इन वाक्यों में क्रियाएँ किसी काल-विशेष की नहीं है, बल्कि सबों में विधान या आज्ञा पाई जाती है। अतः जिन क्रियाओं से कोई विधान या आज्ञा प्रकट हो, उन्हें विधि क्रिया कहते हैं। जैसे;

१ प्रत्यक्षविधि—आ, पढ़, चल, आवे, पढ़े, चले आदि।

२ आदरविधि—आइये, पढ़िये, चलिये, आइयेगा, पढ़ियेगा आदि।

३ परोक्षविधि—तू आना, तू पढ़ना, तू चलना आदि।

## अभ्यास

१. काल कितने तरह के हैं? २. भूतकाल से क्या समझते हो? उसके कितने भेद होते हैं? ३. वर्त्तमान काल के भेद उदाहरण के साथ बताओ। ४. सम्भाव्य भविष्यत् से क्या समझते हो? ५. विधिक्रिया किसे कहते हैं?

# क्रियाओं के रूप और रचना

## अकर्मक क्रिया—हँसना (हँस धातु)

### सामान्य भूत

पुंल्लिग कर्त्ता के साथ—

| पुरुष | एकवचन | बहुव |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं हँसा | हम हँ |
| मध्यमपुरुष | तू हँसा | तुम |
| अन्यपुरुष | वह हँसा | वे हँस |

स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ—

| पुरुष | एकवचन | बहुव |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं हँसी | हम हँ |
| मध्यमपुरुष | तू हँसी | तुम हँ |
| अन्यपुरुष | वह हँसी | वे हँसीं |

## सकर्मक क्रिया—बोलना (बोल धातु)

पुंल्लिग कर्त्ता के साथ—

| पुरुष | एकवचन | बहुव |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं बोला | हम बे |
| मध्यमपुरुष | तू बोला | तुम बे |
| अन्यपुरुष | वह बोला | वे बोल |

स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ—

| पुरुष | एकवचन | बहुव |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं बोली | हम बो |
| मध्यमपुरुष | तू बोली | तुम बो |
| अन्यपुरुष | वह बोली | वे बो |

ऊपर के रूपों से ज्ञात होता है कि अकर्मक वा सकर्मक क्रिया के सामान्य भूत में, चाहे किसी भी पुरुष में अकारान्त धातुओं के अंतिम 'अ' के स्थान में पुंल्लिग एकवचन में 'आ' और बहुवचन में 'ए' तथा स्त्रीलिंग एकवचन में 'ई' और बहुवचन में 'ईं' हो जाते हैं।

## अकर्मक क्रिया--आना ( आ धातु )

| पुंल्लिग कर्त्ता के साथ— | एकवचन | वहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं आया | हम आये |
| मध्यमपुरुष | तू आया | तुम आये |
| अन्यपुरुष | वह आया | वे आये |

स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ—

| | | |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं आई | हम आईं |
| मध्यमपुरुष | तू आई | तुम आईं |
| अन्यपुरुष | वह आई | वे आईं |

## सकर्मक क्रिया—( ला धातु )

*पुंल्लिग कर्त्ता के साथ—*

| | | |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं लाया | हम लाये |
| मध्यमपुरुष | तू लाया | तुम लाये |
| अन्यपुरुष | वह लाया | वे लाये |

*स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ—*

| | | |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं लायो (ई) | हम लायीं ( ईं ) |
| मध्यमपुरुष | तू लायी ( ई ) | तुम लायीं ( ईं ) |
| अन्यपुरुष | वह लायी (ई) | वे लायीं ( ईं ) |

ऊपर के रूपों से ज्ञात होता है कि—अकर्मक या सकर्मक क्रिया ऊ
समान्यभूत में चाहे किसी भी पुरुष में आकारान्त धातुओं के अन्
'आ' के आगे पुंल्लिग एकवचन में 'या' और बहुवचन में 'ये'
स्त्रीलिंग एकवचन में 'यी' या 'ई' और बहुवचन में 'यीं' वा 'ईं'
जाते हैं। केवल 'जा' धातु में 'जा' के स्थान में 'ग' हो जाता है
या-ये, ई-ईं जोड़े जाते हैं।

## सकर्मक क्रिया—बोना ( बो धातु )

'बोना' आदि ओकारात धातु में भी या, ये, यी, वा ई, यीं
ईं—ये सभी विकार होंगे। जैसे—बोया-बोये,बोयी (ई
बोईं ( ईं )।

## सकर्मक क्रिया—छूना ( छू धातु )

| | |
|---|---|
| मैंने, तूने या उसने | लोटा छुआ या रुपये छुए। |
| हमने, तुमने या उन्होंने | पेंसिल छुई या किताबें छुईं। |

ऊपर के वाक्यों से ज्ञात होता है कि—क्रियाओं के सामान्य
में ऊकारान्त धातुओं के अन्तिम 'ऊ' को 'उ' करके उसके
पुंल्लिग एकवचन में 'आ', बहुवचन में 'ए' तथा स्त्रीलिंग एकव
में 'ई' और बहुवचन में 'ईं' जोड़े जाते हैं।

## सकर्मक क्रिया—पीना ( पी धातु )

| | |
|---|---|
| मैंने,तूने, वा उसने | पानी पीया वा कई तरह के पानी पि |
| हमने, तुमने या उन्होंने | शराब पी वा कई तरह की शराबें प |

## सकर्मक क्रिया—देना ( दे धातु )

| | |
|---|---|
| मैंने, तूने वा उसने | पैसा दिया वा पैसे दिये। |
| हमने, तुमने वा उन्होंने | गाली दी वा गालियाँ दीं। |

ऊपर के वाक्यों से ज्ञात होता है कि—ईकारान्त और एकारान्त
[धा]तुओं के रूप सामान्यभूत में एक समान होते हैं और क्रमशः
[इन]के अन्तिम 'ई' और 'ए' के स्थान में 'इ' करके उनके आगे पुंल्लिग
[एकव]चन में 'या' और बहुवचन में 'ये' (ए) तथा स्त्रीलिंग एकवचन में
[ई] और बहुवचन में 'ईं' जोड़े जाते हैं। [ स्त्रीलिंग में इ+ई
[मिल]कर ई और इ+ईं मिलकर ईं हो जाते हैं। ]

## सकर्मक क्रिया—करना ( कर धातु )

इसके सामान्यभूत में 'कर' के स्थान में 'कि' हो जाता है और
[शे]ष विकार ऊपर के दोनों धातुओं के सामान होते हैं। जैसे—
[किया]— किये ( ए ), की—कीं।

## अकर्मक क्रिया—होना ( हो धातु )

इसके सामान्यभूत में 'हो' के स्थान में 'हु' हो जाता है और
[उस]के आगे पुंल्लिग एकवचन में 'आ' और बहुवचन में 'ए' तथा
[स्त्री]लिंग एकवचन में 'ई' और बहुवचन में 'ईं' जोड़े जाते हैं। जैसे—
[हुआ]—हुए, हुई—हुईं।

## आसन्नभूत

कर्त्ता के साथ 'ने'+विभक्ति लेनेवाली सकर्मक क्रियाओं को
[छो]ड़कर अकर्मक या सकर्मक सभी धातुओं के सामान्यभूत की

---

+ बोलना, थकना, लाना, भूलना, जानना, जनना आदि कुछ क्रियाओं को
[छोड़]कर शेष सभी सकर्मक क्रियाओं के *सामान्य*, *आसन्न*, पूर्ण और संदिग्ध
[क]ाल में कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति आती है

क्रियाओं के आगे भी लिंग में अन्यपुरुष के एकवचन में 'है' बहुवचन में 'हैं'; मध्यमपुरुष के एकवचन में 'है' और बहुव 'हो' तथा उत्तमपुरुष के एकवचन में 'हूँ' और बहुवचन में 'हैं' पर आसन्नभूत काल की क्रियाएँ बनती हैं।

### अकर्मक—हँसना

| पुल्लिग कर्त्ता के साथ— | एकवचन | बहुवच |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं हँसा हूँ | हम हँसे |
| मध्यमपुरुष | तू हँसा है | तुम हँसे |
| अन्यपुरुष | वह हँसा है | वे हंसे है |
| स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ— | | |
| उत्तमपुरुष | मैं हँसी हूँ | हम हँसी |
| मध्यमपुरुष | तू हँसी है | तुम हँसी |
| अन्यपुरुष | वह हँसी है | वे हँसी |

### सकर्मक—लाना

| पुंल्लिग कर्त्ता के साथ— | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं लाया हूँ | हम लाये |
| मध्यमपुरुष | तू लाया है | तुम लाये |
| अन्यपुरुष | वह लाया है | वे लाये हैं |
| स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ— | | |
| उत्तमपुरुष | मैं लायी हूँ | हम लायी |

| | | |
|---|---|---|
| मध्यमपुरुष | तू लायी है | तुम लायी हो |
| अन्यपुरुष | वह लायी है | वे लायी हैं |

न्तु—

कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति आने पर किसी भी लिंग और
ष के एकवचन में 'है' और वहुवचन में 'हैं' जोड़े जाते हैं जैसे—

मैंने, तूने वा उसने पेड़ा खाय. है वा पेड़े खाये हैं।
हमने, तुमने वा उनने मिठाई खाई वा मिठाइयाँ खाई

## पूर्णभूत

किसी भी सामान्यभूत की क्रिया के आगे सभी पुरुषों के पुंल्लिग
वचन में 'था' और वहुवचन में 'थे' तथा स्त्रीलिंग के एकवचन
'थी' और वहुवचन में 'थीं' जोड़े जाते हैं। जैसे—

### अकर्मक—आना

लिंग—मैं, तू वा वह आया था। हम तुम वा वे आये थे।

ीलिंग— „ „ आयी थी। „ „ आई थीं।

### सकर्मक—लाना

लिंग—मैं, तू वा वह लाया था। हम, तुम वा वे लाये थे।

ीलिंग— „ „ लायी थी। „ „ लाई थीं।

### सकर्मक—खाना ( 'ने' विभक्ति के साथ )

ने, तूने वा उसने } पेड़ा खाया था वा पेड़े खाये थे।
मने, तुमने वा उन्होंने } रोटी खायी थी वा रोटियाँ खाई थीं।

## सन्दिग्धभूत

किसी भी सामान्यभूत की क्रिया के आगे, सभी पुरुषों के प
एकवचन में 'होगा' और बहुवचन में 'होंगे' तथा स्त्रीलिंग एक
में 'होगी' और बहुवचन में 'होंगी' जोड़े जाते हैं। किन्तु म
पुरुष के बहुवचन पुंल्लिंग में 'होगे' और स्त्रीलिंग में 'होगी'
जायँगे। जैसे—

### अकर्मक--हँसना

पुंल्लिंग—मैं, तू वा वह हँसा होगा। { हम वा वे हँसे होंगे
तुम हँसे होगे।

स्त्रीलिंग—मैं, तू वा वह हँसी होगी। { हम वा वे हँसी हं
तुम हँसी होगी।

### सकर्मक—बोलना

पुल्लिंग —मैं, तू वा वह बोला होगा। { हम वा वे बोले हं
तुम बोले होगे।

स्त्रीलिंग—मैं, तू वा वह बोली होगी। { हम वा वे बोली हं
तुम बोली होगी

### सकर्मक—खाना ( 'ने' विभक्ति के साथ )

मैंने, तूने वा उसने } पेड़ा खाया होगा वा पेड़े खाये हों
हमने, तुमने वा उन्होंने } रोटी खायी होगी वा रोटियाँ खाई हं

विशेष—कर्त्ता के साथ 'ने' विभक्ति लेनेवाली क्रियाओं को
कर मैं के साथ 'होगा' के स्थान पर होऊँगा और हूँगा; हम के

होंगे के स्थान पर होयेंगे और होयँगे, तथा स्त्रीलिंग में मैं के साथ *होगी* के स्थान पर *होऊँगी* और *हूंगी* तथा हम के साथ *होंगी* के स्थान पर *होयेंगी* और *होवेंगी* भी बोले जाते हैं।

## अपूर्णभूत

किसी भी धातु के आगे सभी पुरुषों के पुंल्लिग एकवचन में 'ता' और बहुवचन में 'ते' तथा स्त्रीलिंग एकवचन में '*ती*' और बहुवचन में *तीं* जोड़ने के बाद पूर्णभूत के समान क्रमशः '*था, थे, थी, थीं*' जोड़ने से अपूर्णभूत के रूप बनते हैं।

### अकर्मक—आना

पुंल्लिग—मैं, तू वा वह आता था। हम, तुम वा वे आते थे।
स्त्रीलिंग— „ „ „ आती थी। „ „ „ आती थीं।

### सकर्मक—खाना

पुंल्लिग—मैं, तू वा वह खाता था। हम, तुम वा वे खाते थे।
स्त्रीलिंग—मैं, तू वा वह खाती थी। हम, तुम वा वे खाती थीं।

## हेतुहेतुमद्भूत

किसी भी अपूर्णभूत की क्रिया के रूपों में से था, थे, थी और थीं को हटा देने से इस भूतकाल की क्रियाएँ बनती हैं। जैसे—

### अकर्मक—हँसना

पुंल्लिग—मैं, तू वा वह हँसता। हम, तुम वा वे हँसते।
स्त्रीलिंग—„ „ „ „ हँसती। „ „ „ „ हँसतीं।

### सकर्मक—खाना

पुंल्लिंग—मैं, तू वा वह खाता। हम तुम वा वे खाते।
स्त्रीलिंग—मैं, तू वा वह खाती। हम, तुम वा वे खातीं।

## सामान्य वर्त्तमान

### अकर्मक—हँसना

*पुंल्लिंग कर्त्ता के साथ :—*

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं हँसता हूँ | हम हँसते हैं |
| मध्यमपुरुष | तू हँसता है | तुम हँसते हो |
| अन्यपुरुष | वह हँसता है | वे हँसते हैं |

स्त्रीलिंग में 'तो' या 'ते' की जगह 'ती' हो जाता है।

*पुंल्लिंग कर्त्ता के साथ :—*

| | | |
|---|---|---|
| उत्तमपुरुष | मैं लिखता हूँ | हम लिखते |
| मध्यमपुरुष | तू लिखता है | तुम लिखते |
| अन्यपुरुष | वह लिखता है | वे लिखते |

स्त्रीलिंग में 'ता' या 'ते' की जगह 'ती' हो जाता है।

उपर्युक्त रूपों से ज्ञात होता है कि—

धातु के आगे पुंल्लिंग एक वचन में 'ता' तथा बहुवचन में और स्त्रीलिंग के दोनो वचनों में 'ती' जोड़ कर उनके अन्यपु एक-वचन में 'है' और बहुवचन में 'हैं'; मध्यमपुरुष एकव में 'हैं' और बहुवचन में 'हो' तथा उत्तम पुरुष एकवचन

' और बहुवचन में 'हैं' लगाने से सामान्यवर्तमान काल की ़्रयाएँ बनती हैं।

## तात्कालिक वर्त्तमान

*पुंल्लिंग कर्त्ता के साथ :—*

| | | |
|---|---|---|
| त्तमपुरुष | मैं हँस रहा हूँ | हम हँस रहे हैं |
| ध्यमपुरुष | तू हँस रहा है | तुम हँस रहे हो |
| ान्यपुरुष | वह हँस रहा है | वे हँस रहे हैं |

स्त्रीलिंग में 'रहा', 'रहे' की जगह 'रही' जोड़ा जाता है।

ऊपर के रूपों से ज्ञात होता है कि धातु के आगे लिंग, वचन ौर पुरुष के अनुसार 'रहना' क्रिया का आसन्नभूतकालिक रूप ोड़ देने से तात्कालिक वर्तमान काल की क्रियाएँ बनती हैं।

## सन्दिग्ध वर्त्तमान

*पुंल्लिंग कर्त्ता के साथ :—*

| | | |
|---|---|---|
| त्तमपुरुष | मैं हँसता हूँगा | हम हँसते होंगे |
| ध्यमपुरुष | तू हँसता होगा | तुम हँसते होगे |
| न्यपुरुष | वह हँसता होगा | वे हँसते होंगे |

*स्त्रीलिंग कर्त्ता के साथ:—*

| | | |
|---|---|---|
| त्तमपुरुष | मैं हँसती हूँगी | हम हँसती होंगी |
| ध्यमपुरुष | तू हँसती होगी | तुम हँसती होगी |
| न्यपुरुष | वह हँसती होगी | वे हँसती होंगी |

ऊपर के रूपों से ज्ञात होता है कि—संदिग्ध-वर्त्तमान की क्रिया नाने में हेतु-हेतुमद्भूत के आगे सभी पुरुषों के पुंल्लिंग एकवचन

में 'होगा' और बहुवचन में 'होंगे' तथा स्त्रीलिंग एकवचन में '
और बहुवचन में 'होंगी' जोड़े जाते हैं; किन्तु मध्यम
के बहुवचन में पुंल्लिंग में 'होगा' और स्त्रीलिंग में '
ही रहेंगे।

## सामान्य भविष्यत्

*पुंल्लिंग कर्त्ताके साथ:—*

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं लिखूँगा | हम लिखेंगे |
| म० पु० | तू लिखेगा | तुम लिखोगे |
| अ० पु० | वह लिखेगा | वे लिखेंगे |

*स्त्रीलिंग कर्त्ताके साथ :—*

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं लिखूँगी | हम लिखेंगी |
| म० पु० | तू लिखेगी | तुम लिखोगी |
| अ० पु० | वह लिखेगी | वे लिखेंगी |

ऊपर के रूपों से ज्ञात होता है कि सामान्य भविष्यत्
क्रियाएँ बनाने में धातु के अन्त्य स्वर के स्थान में दोनों लिंगों
अन्यपुरुष के दोनों वचनों में क्रमशः ए-एँ, मध्यम पुरुष में ए
और उत्तम पुरुष में ऊँ-एँ हो जाते हैं तथा उनके आगे में पुं
एकवचन में 'गा' और बहुवचन में 'गे' एवं स्त्रीलिंग के दोनों व
में 'गी' जोड़े जाते हैं।

## सम्भाव्य भविष्यत्

*पुंल्लिंग या स्त्रीलिंग कर्त्ताके साथ:—*

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं लिखूँ | हम लिखें |

| | | |
|---|---|---|
| म० पु० | तू लिखे | तुम लिखो |
| अ० पु० | वह लिखे | वे लिखें |

ऊपर के रूपों से ज्ञात होता है कि सामान्य भविष्यत् के रूपों में से गा, गे, गी को हटा देने से सम्भाव्य भविष्यत् के रूप बन जाते हैं।

## वाच्य-भेद

मोहन दौड़ता है—मोहन से दौड़ा नहीं जाता।

राम खाता है—रामसे रोटी खाई जाती है।

ऊपर के वाक्यों से ज्ञात होता है कि—वाक्यों में कभी "कर्त्ता" की, कभी "कर्म" की और कभी "क्रिया" की प्रधानता रहती है। पहले और तीसरे वाक्यों में कर्त्ता प्रधान है, क्योंकि उसीके अनुसार क्रियाओं के लिंग, वचन और पुरुष हैं।

चौथे वाक्य में कर्म की प्रधानता है, क्योंकि उसी के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष हैं।

दूसरे वाक्य में क्रिया स्वयं प्रधान है, क्योंकि उसके लिंग, वचन और पुरुष किसी की अपेक्षा नहीं रखते।

अतः वाच्य के विचार से हिन्दी में तीन प्रकार के वाक्य होते हैं:—

*कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।*

**कर्तृवाच्य**—वह है, जिसमें कर्त्ता की प्रधानता रहती है। यह अकर्मक और सकर्मक, दोनों क्रियाओं के व्यवहार में होता है।

जैसे—*श्याम सोता है। नरेश रोटी खाता है।*

**कर्मवाच्य**—वह है, जिसमें कर्म की प्रधानता रहती है। यह केवल सकर्मक क्रियाओं के व्यवहार में होता है। जैसे—मुझसे *आम खाया जाता है। तुमसे पेड़े खाये जाते हैं। राम से रोटी खाई जाती है।*

**भाववाच्य**—वह है, जिसमें भाव अर्थात् क्रिया प्रधान रहती है। यह केवल अकर्मक क्रियाओं के व्यवहार में होता है। इसका प्रयोग केवल अशक्यता के अर्थ में 'नहीं' के साथ होता है। जैसे-*मुझसे दौड़ा नहीं जाता है। माधुरी से लिखा नहीं जाता है। रोगी से सोया नहीं जाता है।*

[ ऊपर केवल वर्तमान काल के ही उदाहरण हैं, किन्तु स्मरण रखना चाहिए कि सभी काल में ये वाच्य भेद होंगे ]

## वाच्य-परिवर्तन

| *सक० कर्तृवाच्य—* | *कर्मवाच्य* |
|---|---|
| मैं रोटी खाता हूँ। | मुझसे रोटी खाई जाती है। |
| मैं ने रोटी खाई। | मुझ से रोटी खाई गई। |
| मैं रोटी खाऊँगा। | मुझसे रोटी खाई जायगी। |
| *अक० कर्तृवाच्य—* | *भाववाच्य* |
| मैं जाता हूँ। | मुझसे जाया जाता है। |
| मैं बैठा हूँ। | मुझसे बैठा गया। |
| मैं बैठूँगा। | मुझसे बैठा जायगा। |

ऊपर के वाक्यों से पता चलता है कि कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य या भाववाच्य में बदला जाता है। साधारणतः धातु के आगे '

लगा कर तथा उसके आगे 'जाना' क्रिया को काल के अनुसार जोड़ कर कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाया जाता है। साथ ही, ऐसे वाक्यों का कर्त्ता करण में बदल जाता है।

कर्मवाच्य के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं और भाववाच्य की क्रिया सदा एकवचन, पुंल्लिग और अन्यपुरुष में आती है। लेकिन जब कर्म 'को' विभक्ति के साथ आता है तब कर्मवाच्य की क्रिया भी सदा एकवचन, पुंल्लिग और अन्यपुरुष में आती है। जैसे; रोटी को खाया गया।

### अभ्यास

१. होना, छूना, देना और रहना क्रियाओं के रूप सभी भूत-कालों में लिखो। २. सोना, जाना और आना क्रियाओं के रूप वर्त्तमान और भविष्यत् काल में लिखो। ३. देखना के रूप सामान्यभूत के कर्मवाच्य में और जाना के रूप अपूर्ण भूत के भाववाच्य में लिखो।

## संयुक्त क्रिया

१. गुण्डों ने कैलाश को मारा। २. मैं सारी पुस्तक देख गया। ३. तुम घर से हो आये? ४. तुम सो जाओ। ५. मैंने बैठे-बैठे रात भर जाग डाला। ६. श्याम दिन में भी सो जाया करता है। ७. मैं वहाँ से चल दिया।

ऊपर के वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि कभी-कभी दो-दो तीन-तीन क्रियाएँ एक साथ मिलकर एक ही क्रिया का भाव जताती

हैं। सभी वाक्यों में दो-दो है, पर छठें वाक्य में तीन क्रिया हैं। अतः—

जब दो या तीन क्रियाएँ एक साथ मिलकर व्यवहृत होती तब उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं।

ऊपर के सातवें वाक्य से सिद्ध होता है कि संयुक्त क्रियाओं पहली क्रिया का ही अर्थ प्रधान रहता है। दूसरी क्रिया केवल पू होती है। अतः पहली क्रिया के अनुसार ही अकर्मक या सकर्म समझना चाहिये। किन्तु दूसरे और पाँच वाक्य से यह सि होता है कि अन्तिम क्रिया भी कर्त्ता वा कर्म से संबंध रखती अर्थात् वह वाच्यानुसार कर्त्ता वा कर्म के अनुकूल रहती है।

नीचे लिखे नियमों से संयुक्त क्रियाएँ बनाई जाती हैं:—

(१) धातु के आगे *आना*, *जाना*, *देना*, *लेना*, *उठना*, *बैठना*, *रह* *रखना*, *डालना*, *पड़ना*, *सकना* और *चुकना* जोड़ने से, जैसे—आ आना, खा जाना, धर देना, जा सकना, दे चुकना आदि।

(२) सामान्यभूत की क्रिया के आगे *चाहना* जोड़ने से। जैसे- किया चाहना, सुना चाहना, देखा चाहना आदि।

(३) सामान्यभूत की अकर्मक क्रिया के आगे *जाना* जोड़ने से जैसे—सोया जाना, रोया जाना, दौड़ा जाना आदि।

(४) सामान्यभूत की क्रिया के अन्तिम 'अ' के स्थान में ' करके उसके आगे *जाना*, *देना* और *लेना* जोड़ने से। जैसे—कि जाना, लिये जाना आदि।

(५) हेतुहेतुमद्भूत की क्रिया के अन्तिम 'आ' के स्थान में 'ए' रके उसके आगे 'बना' जोड़ने से। जैसे—करते बना, चलते बना आदि।

(६) साधारण क्रिया के आगे *पड़ना, होना* और *चाहिये* जोड़ने से। जैसे—खाना पड़ा, सोना पड़ा, रहना होगा, रहना चाहिये आदि।

(७) साधारण क्रिया के '*ना*' को '*ने*' करके उसके आगे *लगना*, *देना* और *पाना* जोड़ने से। जैसे—खाने लगना, पढ़ने लगना, रोने देना, हँसने देना, कहने पाना, आने पाना आदि।

इनके अतिरिक्त *सुनाई पड़ना* वा *देना*, *दिखाई पड़ना* वा *देना* और *चलना-चालना*, *चलना-फिरना*, *रोना-धोना*, *खेलना-कूदना* आदि कई सहकारी क्रियाएँ भी संयुक्त क्रियाएँ हैं।

## अभ्यास

१. संयुक्त क्रिया किसे कहते हैं? २. संयुक्त क्रिया में कर्त्ता या कर्म की अनुकूलता कौन क्रिया रखती है? ३. पाँच ऐसी संयुक्त क्रियाएँ लिखो, जिनमें पहली क्रिया के धातु ही दीख पड़ें। ४. तीन ऐसी संयुक्त क्रियाएँ बताओ, जिनमें पहली क्रिया के साधारण रूप दीख पड़ें।

# प्रेरणार्थक क्रिया

गोविन्द नरेश को रुलाता है। श्याम बच्चे को चलाता है।

मास्टर दिनेश से बाजा बजवाता है।

ऊपर के वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि रोने, चलने और बजने के काम क्रमशः *नरेश*, *बच्चा* और *बाजा* करते हैं, पर क्रियाएँ

उनके अनुकूल नहीं हैं और रूप भी बदल गये हैं। ये क्रियाएँ
*श्याम* और *मास्टर* की क्रमशः अनुकूलता रखती हैं। ऐसी क्रिया
*प्रेरणार्थक क्रिया* कहते हैं और उनके कर्त्ताओं को *प्रेरक* वा
कर्त्ता कहते हैं।

पहले और दूसरे वाक्यों से ज्ञात होता है कि अकर्मक औ
भी प्रेरणार्थक होने पर सकर्मक हो जाती हैं।

तीसरे वाक्य में *बजवाना* क्रिया पर ध्यान देने से ज्ञात हो
कि इसके तीन कर्त्ता हैं। क्योंकि बाजा बजता है। *दिनेश*
बजाता है। उसके बाद मास्टर *दिनेश* से बाजा बजवाता है। अ
सिद्ध हुआ कि कभी-कभी प्रेरणार्थक से भी प्रेरणार्थक क्रिया
जाती है। ऐसी क्रिया को *द्विप्रेरणार्थक क्रिया* कहते हैं।

## प्रेरणार्थक क्रियाओं के कुछ उदाहरण

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पढ़ना | पढ़ाना | पढ़वाना | उठना | उठाना | उठ |
| चलना | चलाना | चलवाना | घूमना | घुमाना | घुम |
| रोना | रुलाना | रुलवाना | कहना | कहाना | कह |
| सोना | सुलाना | सुलवाना | कटना | काटना | कट |
| देना | दिलाना | दिलवाना | खुलना | खोलना | खुल |
| टलना | टालना | टलवाना | घिरना | घेरना | घिर |
| पिसना | पीसना | पिसवाना | दीखना | देखना | दिख |
| पिटना | पीटना | पिटवाना | जुटना | जोड़ना | जुड़ |
| लुटना | लूटना | लुटवाना | टूटना | तोड़ना | तुड़ |

## अभ्यास

प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं ? कहना, चलना, बोलना, रहना, देखना, पिटना, पीसना—इन क्रियाओं से यथासंभव प्रेरणार्थक और द्विप्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाओ।

## नामज क्रिया ( नाम धातु )

वह क्या बतियाता है ? तुम क्यों लजाते हो ?—इन वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि कभी-कभी बात, लाज आदि नामों अर्थात् संज्ञाओं से भी क्रियाएँ बन जाती हैं। *ऐसी क्रियाओं को नामज क्रिया वा नाम धातु कहते हैं।*

### कुछ उदाहरण:—

बात—बतियाना, लाज—लजाना
सूझ—सुझाना, गर्म—गर्माना
रंग—रंगना, ठंढ—ठंढाना

## अनुकरणात्मक क्रिया

चटपट, पटपट आदि अनुकरण वाले शब्दों से भी कुछ क्रियाएँ बनती हैं। उन्हें अनुकरणात्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—थपथपाना, बकबकाना, चटपटाना, सरसराना इत्यादि।

## पूर्वकालिक क्रिया ( असमापिका क्रिया )

मैं खाकर सो जाता हूँ। तुम पढ़कर खाते हो ?

मेरा एक काम करके जाओ।

उपर्युक्त वाक्यों से ज्ञात होता है कि कर्त्ता जब एक क्रिया पूरी

करके दूसरा व्यापार करता है तब पहली क्रिया वाले धातु में कर करके जोड़कर उसे अव्यय के समान अविकृत क्रिया बना लिया जाता है। ऐसी क्रिया को *पूर्वकालिक* वा *असमापिका* क्रिया कहते हैं।

प्रधान क्रियाओं की तरह पूर्वकालिक क्रियाएँ भी कर्म आदि साथ लेती हैं। जैसे—मैं *सोहन को देखकर* चिढ़ जाता हूँ। *आकर* पढ़ लेना। डेरे में *रहकर* क्या करोगे ?

## अभ्यास

१. नाम धातु से क्या समझते हो ? २. नामज क्रिया के उदाहरण दो। ३. पूर्वकालिक क्रिया किसे कहते हैं ? ४. 'चिढ़ता है', 'रहकर'—दोनों कैसी क्रियाएँ हैं ?

# अव्यय और उसके भेद

खाने में जल्दी मत करो। तुम पीछे आना।

हम और गिरीन्द्र जाते हैं। तुम शाम को वा भोर में आ जाना।

अरे ! गाड़ी खुल गई ?

ऊपर के वाक्यों से मालूम होता है कि *जल्दी, पीछे, और, वा,* ये सभी अव्यय एक श्रेणी के नहीं हैं। पहले से क्रिया की विशेषता, दूसरे से सम्बन्ध, तीसरे से संयोजकता ( मिलाव करने का गुण ), चौथे से वियोजकता ( अलगाव करने का गुण ) और पाँचवें से आश्चर्य आदि प्रकट होते हैं। अतः—

अव्यय के ५ मुख्य भेद हैं—*क्रियाविशेषण, सम्बन्धसूचक, संयोजक, वियोजक वा विभाजक* तथा *विस्मयादिसूचक*।

१. क्रियाविशेषण—जो अव्यय क्रिया के काल, स्थान, परि-णाम और रीति इन विशेषताओं को बताता है। जैसे—

(क *काल*—अब, अभी, तव, तभी, कव, कभी, जव, जभी, सदा, हमेशा, प्रात, सवेरे, बार-बार, आज, कल, परसों आदि।

(ख) *स्थान*—यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, इधर, उधर, जिधर, ...धर, किधर, निकट, समीप, पास, दूर आदि।

(ग) *परिणाम*—थोड़ा, बहुत, ज्यादा, कम, कुछ, अधिक, अति, ...तिशय, अत्यन्त, तनिक, जरा आदि।

(घ) *रीति*—अगर, मगर, यदि, तो, यद्यपि, तथापि, अकस्मात, ...चानक, केवल, शीघ्र, धीरे, परस्पर, वृथा, बेकार, व्यर्थ, स्वयं, ...हीं, न, मत आदि।

२. सम्बन्धसूचक—जो अव्यय संज्ञा अथवा दूसरे शब्दों के ...गे आकर उसका संबंध किसी दूसरे शब्द के साथ जोड़ता है। ...से—आगे, पीछे, बायें, दायें, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, साथ, ...ग, बदले, तुल्य, समान, सदृश, नाईं आदि।

३. संयोजक—जो अव्यय वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ते ...। जैसे—और, एवं, फिर, तो, कि, जो, यदि, भी, यथा आदि।

४. वियोजक—जो अव्यय वाक्यों वा वाक्यांशों को अलग करते हैं। जैसे—चाहे, वा, अथवा, परन्तु, किन्तु, पर, बल्कि आदि।

५. विस्मयादिसूचक—जो अव्यय हर्ष, पीड़ा, आश्चर्य आदि ...भाव प्रकट करते हैं। जैसे—वाह! ओह! अरे! हाय! धिक! ...आदि।

### अभ्यास

१. क्रिया विशेषण के पाँच शब्दों को अलग-अलग पाँच वा में प्रयोग करो। २. संयोजक और विभाजक के पाँच-पाँच उदा दो। ३. तीन विस्मयादिबोधक शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो

---

# तृतीय उत्थान

## शब्दों की व्युत्पत्ति

### उपसर्ग

**शब्दांश**—जो ध्वनियाँ अकेले कोई अर्थ नहीं रखतीं, शब्दों के साथ मिलकर अर्थयुत हो जाती हैं।

जब शब्दों के पूर्व कोई शब्दांश जोड़ा जाता है तब वह कहलाता है और जब शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है त *प्रत्यय* कहलाता है।

उपसर्ग शब्द के पूर्व जुट कर उसके मूल अर्थ में परिवर्त विशेषता ला देता है। संस्कृत के २०-२२ उपसर्ग हिंदी के शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे; *प्र*—प्रबल, प्रताप, प्र *परा*—पराजय, पराभूत। *अप*—अपकार, अपप्रयोग। *सम*—सं संस्कृत। *अनु*—अनुताप, अनुग्रह। *अव*—अवनति, अव *निर्*—निर्मल, निर्भय। *अभि*—अभिप्राय, अभियोग। *अधि*—अधि कार, अधिराज। *वि*—विनय, विलाप। *सु*—सुशील, सुयश। उ उत्कर्ष, उद्योग। *अति*—अतिशय। *निः*—नियोग, निवा

-प्रतिरोध, प्रतिशोध। *परि*-परिताप, परिपूर्ण। *आ*-आगमन,
कर्षण। *उप*—उपकूल, उपकार। दुर्—दुर्गम, दुर्जन। आदि।

कुछ अव्यय, विशेषण तथा अन्य शब्द भी उपसर्ग के रूप में
ते हैं। जैसे; पुनः—पुनर्जन्म। अधस्—अधःपतन। कु—कुपात्र।
, स—सहवास, सफल। सु—सुयोग, सुपात्र। चिर—चिरकाल।
—मुँहफौंसी, मुँहजला।

उर्दू के कुछ उपसर्ग— खुश—खुशबू, खुशहाल। गैर—
-मुमकिन। ला—लाचार, लापता। बे—बेलगान, बेवफा। बा—
कलम, बावफा। दर—दरअसल, दरपेश। बद—बदमाश। ना—
लायक। सर—सरताज, सरदार।

## अभ्यास

१. उपसर्ग और प्रत्यय से क्या समझते हो? २. नीचे लिखे
दों में कोई न कोई उपसर्ग जोड़ो—पात्र, कार्य, जन, मन, यश,
सा, उत्तर, शक, मोल और देश। ३. नीचे लिखे शब्दों को
सर्ग की तरह दूसरे शब्दों के साथ जोड़ो—श्री, अन्त, सर, वीर,
र मुँह।

## प्रत्यय

प्रत्यय मुख्यतः दो प्रकार के हैं—तद्धित और कृत् प्रत्यय। संज्ञा
विशेषण शब्दों के अंत में जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, वे *तद्धित*
यय कहलाते हैं और उनसे बने शब्द *तद्धितान्त* कहलाते हैं। उसी
कार क्रिया के धातु के अंत में जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं उन्हें कृत्
यय कहते हैं और उनके मेल से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

## तद्धित और तद्धितांत शब्दः—

१. *गुणवाचक*—वान्, मान्, वी, इक, इत, ईय, ल, लु, आ, औ आदि प्रत्ययों को जोड़ने से गुणवाचक विशेषण बन जाते हैं।

*वान्*—दयावान्, ज्ञानवान्, बलवान्। *मान्*–बुद्धिमान्, श्रीम
वी—मेधावी, मायावी, मनस्वी, तपस्वी,। इक—व्यावहा
सामाजिक, दैहिक, भौतिक। *इत*—पुलकित, ह षत, दुः
कुंशित। ई—जंगली, स्वदेशी, परदेशी, विदेशी, बरमी, आसा
*ईय*—स्वर्गीय, अवर्णनीय, भारतीय। *ल*—श्यामल, शीतल, वत्स
लु—दयालु, कृपालु, ईर्ष्यालु।। आ—भूखा, प्यासा, ठंढा। औत
बपौती, बुढ़ौती आदि।

२. **अपत्यवाचक**—संज्ञा के आगे अ, इ एय आदि प्रत्यय
जोड़ने से अपत्यवाचक संज्ञा बनते हैं।

जैसे—दैत्य (दिति से), भार्गव (भृगु से), वैष्णव (विष्णु
सौमित्रि (सुमित्रा से), गार्गेय (गर्ग से) इत्यादि।

३. **भाववाचक**—त्व, ता, य, इमा, पन, पा, प, हटआदि प्र
को जोड़कर धर्म, गुण, भाव आदि के बोधक संज्ञा-शब्द
जाते हैं। जैसे;

*त्व*—पुरुषत्व, मनुष्यत्व, मूर्खत्व, दासत्व। *ता*—मनुष्यता, मूर्
दासता, दरिद्रता। *य*—पाण्डित्य, चातुर्य, माधुर्य, औदार्य। इम
महिमा, गरिमा (गुरु से), रक्तिमा, कालिमा। *पन*—लड़क
पागलपन, भोलापन। *पा*—बुढ़ापा। *प*—भायप। *हट*—चिकना

४. कर्तृवाचक—*आर*, *इया*, *ई*, *वाला*, *वाल*, *हारा*, *औटी*, *एरा* आदि प्रत्ययों को जोड़कर कर्तृवाच्य शब्द बनाये जाते हैं।

आर—लोहार, सोनार, चमार, कहार (काम से)। *इया*—मखनिया, पटनिया। *ई*—तेली, माली, धोबी, भोजपुरी, बेनीपुरी। *वाल*—अगरवाल, गायवाल, चूड़ीवाल। *वाला*—दूधवाला, पानवाला। *हारा*—लकड़हारा, चूड़िहारा। *औटी*—चुनौटी। *एरा*—संपेरा।

## कृत्‌प्रत्यय और कृदंत के उदाहरण

अ—लूट, मार, दौड़, पुकार, चाह, समझ, उठ-बैठ आदि। अक—पालक, पूजक, याचक, भाजक। आऊ—जड़ाऊ, टिकाऊ। आक—तैराक, पैराक,। आका—लड़ाका, उड़ाका। आव—छिड़काव, बहाव, झुकाव, चढ़ाव। आलू—झगड़ालू, बैठालू। इया—बढ़िया, घटिया। ई—रेती, जोती। आई—सुनाई, ठगाई। ऊ—झाड़ू। एरा—लुटेरा। औटी—कसौटी। न—बेलन, बुहारन। ना—ओढ़ना, बिछौना, ढकना। नी—कतरनी, ढकनी। वैया—गवैया, परखैया, खेवैया, सुनवैया। वट—थकावट, लिखावट, दिखावट। हट—खुजलाहट, चिल्लाहट,। ती—घटती, बढ़ती।

## कारक-प्रत्यय

तद्धित और कृत् प्रत्ययों के अतिरिक्त और भी अनेक तरह के प्रत्यय होते हैं।

स्त्री-प्रत्यय—पुंल्लिंग संज्ञाओं में आ, ई, इन, आनी, आइन प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनाई जाती हैं। इन प्रत्ययों को स्त्री-प्रत्यय कहते हैं।

**क्रिया-प्रत्यय**—क्रिया के साधारण रूप में 'ना' को हटाकर ता, ती, या, ई आदि जोड़ कर क्रिया के काल बनाये जाते। ... प्रत्ययों को *क्रिया-प्रत्यय* कहते हैं।

**कारक-प्रत्यय**—ने, को, से, केलिए आदि कारकों की विभक्तियाँ भी प्रत्यय ही हैं।

यहाँ कारक की विभक्तियों के कुछ प्रयोग बताये जाते हैं:—

**'ने' विभक्ति**—(क) सकर्मक क्रिया के सामान्य भूत, आसन्न भूत, पूर्णभूत और संदिग्धभूत काल के कर्त्ता के साथ प्रायः ने विभक्ति आती है। जैसे, मैंने आम खाया।

मगर बकना, बोलना, भूकना, लाना—इन सकर्मक क्रियाओं के कर्त्ता के साथ 'ने' का प्रयोग कभी नहीं होता। साथ ही समझना, जनना, सोचना, पुकारना—इन सकर्मक क्रियाओं के उक्त चारों भूत काल में कर्त्ता की 'ने' विभक्ति कहीं आती है और कहीं नहीं आती है। जैसे; वह पुस्तक लाया, राम बोला, मैं समझा या मैंने यह बात समझी, वह पुकारा या उसने पुकारा।

(ख) जब संयुक्त क्रिया के दोनों खंड सकर्मक हों तो उक्त चारों भूतकालों में कर्त्ता 'ने' विभक्ति के साथ आता है; लेकिन अगर कोई खंड अकर्मक रहा तो 'ने' प्रायः नहीं आता है। जैसे; मैंने खा लिया।

(ग) मगर जब संयुक्त क्रिया का अंतिम खंड 'करना' रहे तब कर्त्ता के साथ 'ने' कभी नहीं आता, लेकिन जब अंतिम खंड

डालना' रहे तो चारों भूतकालों में कर्त्ता के साथ 'ने' अवश्य आता मगर 'देना' होने से विकल्प से आता है। जैसे; मैं देखा किया, ने रातभर जाग डाला, मैं रातभर जाग दिया।

(घ) हँस देना, रो देना, मुस्कंरा देना, थूँकना, कूँखना, ाँखना—इन अकर्मक क्रियाओं के चारों भूतकालों में कर्त्ता के साथ ायः 'ने' विभक्ति आती है। जैसे; मैंने हँस दिया, मैंने थूँका आदि।

'को' विभक्ति—क) कर्तृवाच्य वाक्य में प्रायः अप्राणि-वाचक कर्मों को तथा कर्मवाच्य के सभी कर्मों को छोड़कर किसी भी कर्म के साथ 'को' विभक्ति आती है। जैसे—राम श्याम को देखता है। महेन्द्र ने 'जीवानन्दन को' क्यों पीटा ?

(ख) दो कर्मवाली क्रियाओं के अप्रधान कर्म में 'को' विभक्ति आती है, जैसे—शिक्षक 'लड़के को' व्याकरण पढ़ाता है।

(ग) सम्प्रदान कारक के साथ भी 'को' विभक्ति जोड़ी जाती है। जैसे—'किसानों को' वस्त्र दो।

(घ) जिस संयुक्त क्रिया का अन्तिम खंड 'चाहिये' इत्यादि कर्तव्यसूचक शब्द रहे, तो इस अनुज्ञा के कर्त्ता में 'को' विभक्ति जोड़ी जाती है। जैसे—'नरेश को' खेलना नहीं चाहिए।

(च) नमस्कार, धन्यवाद, प्रणाम आदि जिसके लिए आवे, उसके साथ 'को' विभक्ति जोड़ी जाती है। जैसे—गुरुजी को प्रणाम !

इनके अतिरिक्त रात को बिजली गिरी, बैल कितने को [illegible] इत्यादि अनेक वाक्यों में दूसरी विभक्तियों के बदले में भी [illegible] 'को' विभक्ति आ जाती है।

**'से' विभक्ति**—(क) कर्मवाच्य और भाववाच्य वाक्यों में [illegible] के साथ 'से' विभक्ति जोड़ी जाती है। जैसे—राम से [illegible] नहीं जाता। बूढ़े से चना चबाया नहीं जाता।

(ख) किसी क्रिया के करण कारक के साथ 'से' विभक्ति [illegible] जाती है। जैसे—मोहन कलम से लिखता है।

(ग) किसी क्रिया के अपादान कारक के साथ 'से' वि[illegible] जोड़ी जाती है। जैसे—मैं घर से आता हूँ।

(घ) कोई चीज यदि किसी चीज के मूल्य में और बदले [illegible] व्यवहृत हो तो उसमें 'से' विभक्ति जोड़ी जाती [illegible] जैसे—तुमने नोट से जलेबी खरीदी है या पैसे से?

इनके अतिरिक्त अवधि आदि सूचित करने के लिए [illegible] विभक्ति जोड़ी जाती है। जैसे—कब से बैठे हो? भारत से [illegible] कितनी दूर है? तुमसे मोहन बड़ा है या छोटा?

**'के लिए' विभक्ति**—यह विभक्ति सम्प्रदान, प्रयोजन, नि[illegible] आदि में व्यवहृत होती है। जैसे—ब्राह्मण के लिए भोजन चाहि[illegible] जलेबी राम के लिए रखी है। तुम किस लिए यहाँ आये हो?

**का, के, की**—

(क) एक संज्ञा से दूसरी संज्ञा का सम्बन्ध बताने के लिए [illegible] अन्यपुरुष में ये विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं।

[ मध्यम और उत्तमपुरुष सर्वनाम में रा, रे, री कर देते हैं। ]

विशेषता यह है कि इन विभक्तियों में वचन और लिंग का भी भेद होता है। उसपर भी यह विचित्रता कि ये जिसके साथ रहती हैं उसके लिंग, वचन न बताकर उसके सम्बन्धी के लिंग-वचन बताती हैं।

जैसे—राम का घोड़ा। श्याम के बेटे। आपकी पुस्तक।

(ख) होना क्रिया के योग में 'को' के बदले 'के' जोड़ा जाता है।

जैसे—दशरथ के चार बेटे हुए। नरेन्द्र के एक बेटी है। [*मध्यम और उत्तम पुरुष में—तेरे तीन बेटियाँ हैं न? मेरे तो एक बेटा है।*]

में, पर—अधिकरण, निर्धारण (कई में से एक के बारे में कहना) आदि में ये विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं।

जैसे—तुम बरामदे में सोते हो? इन लड़कों में कौन तेज है? चौकी पर बैठो। मुझ पर दया करो। लालटेन कितने में खरीदी है?

## समास

काशी के राजकुमार प्रति-दिन त्रिभुवन के स्वामी चन्द्रचूड़ शंकर को परम-पवित्र पत्र-पुष्प चढ़ाया करते थे।

उपर्युक्त वाक्य से ज्ञात होता है कि *राजकुमार*, *प्रतिदिन*, *त्रिभुवन*, *चन्द्रचूड़*, *परम-पवित्र* और *पत्र-पुष्प* ये शब्द दो-दो शब्दों के मेल से बने हैं और अपनी-अपनी विभक्तियों को छोड़कर अर्थ सहित मिल गये हैं। इसी मेल का नाम *समास* है। समासवाले शब्द *समस्त पद* या *सामासिक पद* कहे जाते हैं।

समास में दो तीन पद अपनी विभक्तियों को छोड़कर अर्थ-सं आपस में मिल जाते हैं। [ किन्तु सन्धि में केवल दो वर्ण मिलते हैं। ]

ऊपर के समस्त पदों से यह भी ज्ञात होता है कि ये बना और अर्थ पर विचार करने से एक श्रेणी के नहीं हैं। अतः

समास मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं—१. अव्ययीभा २. तत्पुरुष, ३. बहुव्रीहि और ४. द्वन्द्व।

अव्ययीभाव—इसमें पूर्व पद का अर्थ प्रधान रहता है। पहला-पद अव्यय रहता है, इसलिए दोनों के मेल से जो श बनता है वह भी अव्यय हो जाता है। जैसे—*यथाशक्ति*, *प्रतिदि* *हररोज*, *दिनोंदिन*, *निधड़क* इत्यादि।

तत्पुरुष—इसमें उत्तर या दूसरे पद का अर्थ प्रधान होता है विग्रह की अवस्था में पहले पद में सभी कारकों की विभक्तियाँ र सकती हैं। जैसे—

*कर्म*—विद्या को प्राप्त—विद्याप्राप्त, दिवंगत, तेलचट्टा, चिड़ीमार
*करण*—विद्या से हीन—विद्याहीन, शोकाकुल, रेखांकित इत्यादि
*सम्प्रदान*—धनलोभ (धन के लिए लोभ) हथकड़ी, राह-खर्च
*अपादान*—स्वर्ग-भ्रष्ट, (स्वर्ग से भ्रष्ट), पथ-भ्रष्ट, देशनिकाला
*सम्बन्ध*—राजपुत्र, गंगाजल, राजकुमार, मुँहचोर इत्यादि
*अधिकरण*—कार्य में निपुण—कार्य-निपुण, वनवास, बटमार

(क) *कर्मधारय*—यह भी तत्पुरुष का एक भेद है, क्योंकि इस भी उत्तर पद का अर्थ ही प्रधान रहता है। इसके दोनों पद प्रथमा

ही रहते हैं, अतः इसे विशेष्य-विशेषण समास भी कहा जाता है। जैसे—परम+ईश्वर=परमेश्वर, ध्रुव+विन्दु=ध्रुवविन्दु, चरण-कमल, पादपद्म, फुलौरी ( फूली हुई बरी ) इत्यादि।

(ख) *द्विगु*—तत्पुरुष में यदि पहला पद संख्यावाचक हो तो उसे द्विगु कहते हैं। जैसे—त्रिभुवन ( तीनों भुवनों का समुदाय ), त्रिलोक (तीनों लोकों का समुदाय), पंचपात्र, तिकोना, चौराहा, चौपाई इत्यादि।

बहुव्रीहि—जिन पदों में समास होता है उनकी प्रधानता न रहकर, कोई भिन्न अर्थ प्रधान रहे, तो उसे *बहुव्रीहि* समझना चाहिये। जैसे—लम्बोदर ( जिसका लम्बा उदर हो )=गणेश; चक्रपाणि ( जिस के पाणि या हाथ में चक्र हो )=विष्णु; नीलाम्बर ( जिसका नीला अम्बर हो ); दशमुख, चन्द्रशेखर, चन्द्रचूड़, इत्यादि।

द्वन्द्व—इसमें समास वाले सभी पदों के अर्थ प्रधान रहते हैं। जैसे—पत्र और पुष्प=पुत्र-पुष्प, फल-फूल, हाथ-पैर, बाल-बच्चा, घर-बार, खेती-बारी इत्यादि।

उपर्युक्त समासों के अतिरिक्त समास के कुछ और भी प्रभेद हैं।

*नञ् तत्पुरुष*—इसमें पहला पद 'न' रहता है। और दूसरा कोई संज्ञा वा विशेषण आदि। जब 'न' किसी व्यञ्जनादि पद के साथ मिलता है तो उसके स्थान पर 'अ' और स्वरादि पद के साथ मिलता है तो उसके स्थान पर 'अन' हो जाता है। जैसे—न कार्य=अकार्य, न भाव=अभाव, न आदर=अनादर। इसी प्रकार अनुपम, अकथ, अटूट, अतुल इत्यादि।

# द्विरुक्ति

घर-घर भीख माँगनेवाले मन-ही-मन अपने भाग्य को बार-
कोसते होंगे। जो बच-बच कर पैर रखते हैं, वे हँसते-हँसते संसा
निभ जाते हैं—इन वाक्यों में *घर-घर*, *मन-ही-मन*, *बार-बार*, *ब*
और *हँसते-हँसते* ये शब्द कोई न कोई विशेषता लाने के लिए दो
बार आये हैं। शब्दों के दुबारे प्रयोग को *द्विरुक्ति* कहते हैं।

यह द्विरुक्ति संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय
पाँचों प्रकार के शब्दों में होती है। जैसे—

**संज्ञा की द्विरुक्ति**—घट-घट बासी राम भजो रे। *दिन-*
दूना बढ़ो। *बात-बात* में मत लड़ो। चोर-चोर मौसेरे भाई।

**सर्वनाम की द्विरुक्ति**—तुम *क्या-क्या* करना चाहते हो!
राम का रूप श्याम से कुछ-कुछ मिलता है।

**विशेषण की द्विरुक्ति**— *ठीक-ठीक* बताओ। *भीनी-भीनी*
बहती है। *मीठी-मीठी* बातें करना कहाँ सीखा ?

**क्रियात्मक विशेषण की द्विरुक्ति**— मैं चलते-चलते
गया। तुम्हारी राह *देखते-देखते* मैं बूढ़ा हो चला। कितने यु
*मारे-मारे* फिर रहे हैं।

**क्रिया की द्विरुक्ति**—*आऊँगा-आऊँगा* कहते हो, पर क
आते नहीं। *मारो मारो* सब लोग चिल्लाने लगे।

**अव्यय की द्विरुक्ति**—*जैसे-जैसे* आगे बढ़ोगे, वैसे-
व्याकरण समझ लोगे। भगवान् बुद्ध जहाँ-जहाँ रहे थे, वहाँ-

अशोक ने खम्भे गड़वाये। खाली हाँ-हाँ करते हो या कुछ समझते भी हो ?

इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे शब्द हैं जो केवल अर्थतः द्विरुक्त हैं। जैसे—*तर्क-वितर्क, आशा-भरोसा, दीन-दुखी, काम-काज, कामधंधा, जीव-जन्तु* आदि। कुछ ऐसे भी द्विरुक्त हैं, जिनमें एक पद अर्थहीन जैसे—ठाट-बाट, सज-धज, आमने-सामने, अड़ोस-पड़ोस आदि।

### अभ्यास

१. समास से क्या समझते हो ? इसके कितने भेद हैं, तुम जानते हो ? २. नञ समास के पाँच उदाहरण दो ? ३. नीचे लिखे सामासिक पदों का विग्रह करते हुए उनके समास बताओ—दिवंगत, तेलचट्टा, मुँहजोर, रेखागणित, देशनिकाला, प्रतिदिन, यथाशक्ति, चक्रपाणि और त्रिकोण।

# चतुर्थ उत्थान

## सन्धि

भारत के सभी परमोदार नरेशों ने विश्वविद्यालय के धनाभाव को बिलकुल दूर कर दिया है।

ऊपर के वाक्य से ज्ञात होता है कि *परमोदार, नरेश, विद्यालय* और *धनाभाव*—इन शब्दों में दो-दो शब्द आपस में मिल गये हैं कि एक-एक शब्द बन गए हैं। अतः सिद्ध होता है कि आवश्यकतानुसार दो वर्ण आपस में मिल जाते हैं। दो वर्णों के परस्पर मेल को सन्धि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकार की होती है---स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि
विसर्गसन्धि।

## स्वर-सन्धि

स्वरों के साथ स्वरों के मेल को स्वर-सन्धि कहते हैं। इसके
भेद होते हैं। (१) दीर्घ, (२) गुण, (३) वृद्धि, (४) यण और
अयादि चार।

दीर्घ— [अ या आ+अ या आ=आ। इ या ई+इ या ई=
उ या ऊ+उ या ऊ=ऊ]

ह्रस्व वा दीर्घ अ, इ, उ, के बाद क्रमशः अ, इ, उ रहे तो
मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। जैसे—भोजन+अर्थ=भोजनार्थ,। भो
+आलय=भोजनालय। विद्या+आलय=विद्यालय। परीक्षा+
=परीक्षार्थी। गिरि+इन्द्र=गिरीन्द्र। गिरि+ईश=गिरीश। नलि
ईश=नलिनीश। पृथ्वी+इन्द्र=पृथ्वीन्द्र। अनु+उदित=अनू
लघु+उर्मि=लघूर्मि। बधू+उत्थान=बधूत्थान।

गुण—[ अ या आ+इ या ई=ए। अ या आ+उ या ऊ=
अ+ऋ=अर् ]

अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ रहें तो दोनों
कर क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाते हैं। जैसे—नर+इ
नरेन्द्र। महा+इन्द्र=महेन्द्र। परम+ईश्वर=परमेश्वर। महा+
=महेश। धर्म+उपदेश=धर्मोपदेश। महा+उपदेशक=महोपदेश
महा+ऊर्मि=महोर्मि। उत्थित+उर्मि=उत्थितोर्मि। परम+ऋ
परमर्षि। राज+ऋषि=राजर्षि आदि।

वृद्धि— [अ या आ+ए या ऐ=ऐ। अ या आ+ओ या औ=
औ। ]

ह्रस्व वा दीर्घ अ के बाद ए वा ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐ तथा
ओ वा औ रहे तो औ हो जाते हैं। जैसे—

ईश्वर+एकत्व=ईश्वरैकत्व; परम+ऐश्वर्य=परमैश्वर्य; तथा+
एव=तथैव; महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य; सिद्ध+ओदन=सिद्धौदन;
महा+ओषध=महौषध; परम+औषध=परमौषध आदि।

यण् — [इ या ई=य्। उ या ऊ=व्। ऋ=र्। ]

ह्रस्व वा दीर्घ इ, उ, ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो इ, उ, ऋ
स्थान में क्रमशः य्, व्, र् हो जाते हैं। जैसे—यदि+अपि=यद्यपि;
इति+आदि=इत्यादि; प्रति+उपकार=प्रत्युपकार; प्रति+एक=
प्रत्येक; देवी+आगमन=देव्यागमन; अनु+अय=अन्वय; अनु+
आगमन=अन्वागमन; अनु+एषण=अन्वेषण; वधू+आसन=
वध्वासन; पितृ+पित्रर्थ; मातृ+आज्ञा=मात्राज्ञा।

अयादि चार—[ए=अय्। ऐ=आय्। ओ=अव्। औ=आव्। ]

ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर रहे तो इन चारों के स्थान
क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाते हैं। जैसे—

शे+अन=शयन; नै+अक=नायक; पो+अन=पवन;
पौ+अक=पावक।

## अभ्यास

१. सन्धि किसे कहते हैं? स्वर सन्धि के कितने भेद हैं? २. यण-

सन्धि के दो उदाहरण दो। ३. नीचे लिखे शब्दों का सन्धि-वि
करो:—

*भोजनालय, परीक्षार्थी, सरलार्थ, महोपदेशक, राजर्षि, महर्षि,*
*महौषध, इत्यादि, अन्वेषण और पावक।*

## व्यञ्जन-सन्धि

यदि व्यञ्जन अपने आगे वाले स्वर अथवा व्यञ्जन के
मिलकर कोई विकार पैदा करे तो उस मेल को व्यञ्जन-सं
कहते हैं।

[ पद के अन्त में रहनेवाले क्, च्, ट्, त्, द्, प्, म्—
इन्हीं वर्णों का भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में परिवर्त्तन होता है।] जैसे

(१) पदान्त (पद के अन्त में रहनेवाले) क्, च्, ट् और प्
बाद कोई स्वर, वर्गों के तीसरे-चौथे वर्ण तथा य, र, ल, व,
चारों के स्थान में क्रमशः अपने-अपने वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात्
ज्, ड् और ब् हो जाते हैं। जैसे—दिक् + अम्बर=दिगम्बर; दि
गज=दिग्गज; दिक्+जनित = दिग्जनित; वाक्+दान+वाग्
दिक्+हस्ती=दिग्हस्ती; अच्+अन्त=अजन्त; षट्+विका
षड्विकार; अप्+ज=अब्ज इत्यादि।

(२) यदि पदान्त त् के बाद कोई स्वर या ग, घ, द, ध
म, य, र और व हों तो त् के स्थान में द् हो जाता है। जैसे—स
आचार=सदाचार; जगत्+ईश्वर = जगदीश्वर; उत्+गम=उद्
उत्+घाटन=उद्घाटन; सत्+विद्या = सद्विद्या; उत्+यो
उद्योग; बृहत्+गृह = बृहद्गृह; सत्+रुचिर = सद्रुचिर इत्या

(३) पदान्त त् और द् के बाद च और छ हों तो, त् द् के स्थान में च्
" " " ज " झ " " " ", ज्
" " " ट " ठ " " " " " ट्
" " " ड " ढ " " " ड् हो जाता है।

जैसे—उत्+चारण-उच्चारण; उत्+छेद=उच्छेद; उत्+ज्वल=उज्ज्वल; तत्+टीका=तट्टीका; विपद्+जाल=विपज्जाल; बृहत्+टंकार=बृहट्टंकार इत्यादि।

(४) पदान्त त् और द् के बाद श हो तो दोनों मिलकर च्छ
और " " " " " " ह हो " " " द्ध हो जाते हैं।

जैसे—सत्+शास्त्र =सच्छास्त्र; उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट; उत्+हृत्=उद्धत्; उत्+हार=उद्धार; पद्+हति=पद्धति इत्यादि।

(५) पदान्त म् के बाद कोई स्पर्श-वर्ण हो तो म् के स्थान में बादवाले वर्ण के वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) अथवा अनुस्वार हो जाता है।

जैसे—सम्+कट=संकट वा सङ्कट; सम्+गति=सङ्गति वा संगति; सम्+चय=संचय वा सञ्चय; सम्+तरण=सन्तरण वा संतरण; सम्+दर्शन=सन्दर्शन वा संदर्शन; सम्+पत्ति=सम्पत्ति वा सपत्ति इत्यादि।

किन्तु अन्तस्थ और ऊष्म-वर्ण के पूर्ववर्ती पदान्त म के स्थान केवल अनुस्वार होता है। जैसे सम्+योग=संयोग, सम्+लाप=संलाप, सम्+वत्=संवत्, सम्+सार=संसार।

(६) पदान्त क्, च्, ट्, त्, प् (वर्गों के प्रथम वर्ण) के बाद न वा म

रहे तो उनके स्थान में क्रमशः ङ्, ञ, ण, न्, म्, (पाँचवें
अथवा ग् ज्, ड्, द्, ब् (तीसरे वर्ण) ो जाते हैं। जैसे दिक्
मणि = दिङ्मणि वा दिग्मणि; दिक् + नाथ = दिङ्
वा दिग्नाथ।

किन्तु *मद*, *मत्त*, *माद*, *मात्र*, *मय* आदि शब्दों के पूर्ववर्ती
स्थान में केवल न होता है। जैसे—उन्मद, उन्मत्त, उन्मा
तत् + मात्र = तन्मात्र, तत् + मय = तन्मय इत्यादि।

(७) त्, द् और न् के बाद ल रहे तो उनके स्थान में ल
जाता है; किन्तु याद रखना चाहिए कि न् का पूर्ववर्ती
सानुनासिक हो जाता है। जैसे—उत् + लिखित = उल्लि
तत् + लीन = तल्लीन; महान् + लाभ = महांल्लाभ इत्यादि।

ध्यान दो—

(क) किसी ह्रस्व स्वर के बाद छ रहे तो च्छ बन जाता
किन्तु दीर्घ स्वर के बाद छ दोनों रूपों में रहता है। जैसे—
+ छेद = परिच्छेद; वि + छेद = विच्छेद; वि + छिन्न = विच्छि
आ + छादित = आच्छादित वा आछादित; आ + छन्न = आच्
वा आछन्न इत्यादि।

(ख) त-थ के पूर्व दन्त्य स्, च-छ के पूर्व तालव्य श्
ट-ठ के पूर्व मूर्धन्य ष् ही रहा करते हैं। जैसे—विस्
मरुस्थल, निश्चय, निश्छल, उत्कृष्ट, षष्ठ इत्यादि।

(ग) तवर्ग के पूर्व सदा दन्त्य न् और टवर्ग के पूर्व सदा मूर्
ण् रहा करते हैं। जैसे—सन्त, लन्दन, महन्थ, दण्ड, डण्डा,
झुण्ड, ठण्ढा इत्यादि।

## अभ्यास

१. व्यञ्जन सन्धि किसे कहते हैं ? २. नीचे लिखे शब्दों का संधि-विच्छेद करो:—वागीश, दिगम्बर, जगदीश, विपज्जाल, उद्योग, उद्धत, पद्धति, संयोग। ३. इन शब्दों की सन्धि करो:— उत् + गम्, उत् + घाटन, ध्वनित + डमरू, सम् + सार, तत् + मय, तत् + लीन, सम् + त और आ + छादन।

# विसर्ग-सन्धि

आगेवाले स्वर या व्यञ्जन के साथ विसर्ग के मेल को *विसर्ग सन्धि* कहते हैं।

१. (क) यदि अकार के वाद विसर्ग और उसके वाद अकार रहे, तो अकार और विसर्ग मिलकर ओकार तथा अगला अकार अर्द्धाकार (ऽ) में बदल जाता है। जैसे—यशः + अभिलाषा = यशो ऽ भिलाषा; मनः + अवधान = मनो ऽ वधान इत्यादि।

(ख) उपर्युक्त विसर्ग के वाद अकार को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे—अतः + एव = अतएव; तेजः + आभास = तेजआभास; यशः + उच्चारण = यशउच्चारण इत्यादि।

(ग) उपर्युक्त विसर्ग के वाद वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, र, ल, व रहे तो अकार और विसर्ग के मेल से ओकार हो जाता है। जैसे—मनः + रथ = मनोरथ; पयः + धर = पयोधर; सद्यः + जात = सद्योजात; यशः + गान = यशोगान; मनः + बिज्ञान = मनोविज्ञान इत्यादि।

२. अ और आ को छोड़कर किसी भी स्वर के बाद विसर्ग हो और उसके बाद कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा या पाँचवाँ वर्ण, या य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान में र हो जाता है।

[ आगे यदि स्वर हो तो र उसमें मिल जाता है और व्यञ्जन हो तो उसके सिरपर चढ़ जाता है ] जैसे—निः+गमन=निर्गमन; दुः+जय=दुर्जय; दुः+जन=दुर्जन; निः+द्वन्द्व=निर्द्वन्द्व; निः+धन=निर्धन; निः+मल=निर्मल; निः+आश्रय=निराश्रय; निः+ईह=निरीह; निः+उपाय=निरुपाय; दुः+ऊह=दुरूह; निः+औषध = निरौषध; पुनः+अपि = पुनरपि; बहिः+आनन्द=बहिरानन्द इत्यादि।

प्रायः विसर्ग के बाद क, ख और प, फ के रहने पर विसर्गस्थ का विसर्ग; च, छ रहने पर श; ट, ठ, रहने पर ष तथा त, थ रहने पर स् हो जाता है। जैसे—मनः+कामना=मनःकामना, यशः+फल=यशःफल, यशः+पालन=यशःपालन, निः+चय=निश्चय, निः+छल=निश्छल, धनु+टंकार=धनुष्टंकार, निः+तार=निस्तार, दुः+तर=दुस्तर इत्यादि।

*विशेष*—यदि र से उत्पन्न विसर्ग के बाद र रहे तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उसका पूर्ववर्त्ती स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे—निः+रस=नीरस; निः+रोग=नीरोग।

*अपवाद*—निः, आविः, बहिः, दुः और चतुः शब्दों के विसर्ग का ष् भी हो जाता है। जैसे—निः+काम=निष्काम; निः+पाप=निष्पाप; निः+फल=निष्फल; बहिः+कार=

बहिष्कार; आविः+कार=आविष्कार; दुः+कर=दुष्कर, चतुः+पद=चतुष्पद इत्यादि।

### अभ्यास

१. विसर्ग संधि किसे कहते हैं। २. नीचे लिखे शब्दों का धि-विच्छेद करोः— अतएव, मनोरथ, मनोहर, नीरस, नीरोग, श्छल, निष्कंटक।

# पंचम उत्थान

## वाक्य-रचना

वाक्यों में नियमानुसार पदों को रखने की विधि को और उनके स्पर अन्वय को *वाक्य-रचना* कहते हैं।

### पदों को रखने की विधि

वाक्य रचना के लिए पहले पदों को रखने की विधि जान लेनी हिए:—

(क) वाक्य में साधारणतः पहले उद्देश्य रहता है तब विधेय। —*राम ने मारा। मोहन पढ़ता है।*

(ख) कर्म क्रिया के पहले आता है; जैसे—*राम ने श्याम को मारा।*

(ग) करण कारक कर्म के पहले आता है। जैसे—*राम ने जूते से म को मारा।*

(घ) सम्प्रदान कर्म के पहले आता है; जैसे—*भिखारी को पैसे दो।*

(ङ) अपादान कारक कर्त्ता के पहले वा पीछे रहता है। जैसे—*कत्ते से ये लोग आ रहे हैं* या *ये लोग कलकत्ते से आ रहे हैं।*

(च) सम्बन्ध अपने सम्बन्धी के पहले आता है। जैसे—*मेरी किताब। श्याम की गाय।*

(छ) अधिकरण कारक कर्त्ता से भी पहले आता है, जैसे—*भारत में अनेक जातियाँ बसती हैं।*

(ज) सम्बोधन या विस्मयादिबोधक अव्यय वाक्य के आरम्भ में आता है; जैसे—*प्रभो! मेरी रक्षा करो!*

(झ) पूर्वकालिक क्रिया समापिका क्रिया के पहले आती है जैसे—*तुम खाकर चले जाओ* इत्यादि।

## पदों के परस्पर अन्वय (सम्बन्ध)

कर्त्ता का क्रिया से अन्वय :—

वह पढ़ता है। वे पढ़ते हैं। मदन पढ़ता है। माधुरी पढ़ती है। तू पढ़ता है। मैं पढ़ता हूँ। तू पढ़ती है। मैं पढ़ती हूँ।—इन वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि कर्त्ता-प्रधान वाक्यों में कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार ही क्रियाओं के लिंग, वचन और पुरुष होते हैं।

नरेश, महेश और दीनानाथ स्कूल जाते हैं। रमा, श्यामा, मोहनी और माधुरी कपड़े सीती हैं।—इन वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि जब कर्तृवाच्य वाक्य में समान लिंग, वचन, पुरुष के अनेक कर्त्ता हों तथा वे 'और' या अन्य संयोजक अव्यय से युक्त हों तो उसकी क्रिया बहुवचन होती है।

बाघ और बकरी एक घाट में पानी पीते हैं—इस वाक्य से ज्ञात होता है कि कर्तृवाच्य वाक्य में भिन्न-भिन्न लिंगों के एकवचन वाले

अनेक कर्त्ता हों तथा वे 'और' आदि संयोजक अव्यय से मिले हों, तो क्रिया प्रायः पुंल्लिंग, बहुवचन होगी।

लड़के, सयाने, बूढ़े और बूढ़ियाँ इकट्ठा थीं।—इस वाक्य से ज्ञात होता है कि कर्तृवाच्य वाक्य में यदि दोनों लिंगों और वचनों के अनेक कर्त्ता 'और' आदि संयोजक अव्यय के साथ युक्त हों तो उनकी क्रिया के लिंग, बचन और पुरुष प्रायः अंतिम कर्त्ता के अनुसार होते हैं।

माधुरी या श्याम बैठेगा। लड़के चाहे लड़कियाँ चली जायँ।—इन वाक्यों से ज्ञात होता है कि कर्तृवाच्य वाक्य में यदि भिन्न-भिन्न लिंगों और वचनों के अनेक कर्त्ता 'या' आदि वियोजक अव्यय से युक्त हों तो उनकी क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष अंतिम कर्त्ता के अनुसार होते हैं।

सूर्य, पृथ्वी, तारे, हम, तुम सबके सब नष्ट हो जायँगे —इस वाक्य से सिद्ध होता है कि कर्तृवाच्य वाक्य में भिन्न-भिन्न लिंगों और वचनों के अनेक कर्त्ता रहने पर भी यदि अन्त में कोई समूह-वाचक शब्द रहे तो क्रिया के लिंग, वचन समूहवाचक शब्द के अनुसार होते हैं।

वह और तू चलेगा। तुम और हम चलेंगे।

वह, तुम और मैं चलूँगा।

इन वाक्यों से ज्ञात होता है कि कर्तृवाच्य वाक्य में यदि कर्त्ता अन्यपुरुष और मध्यमपुरुष में आवें तो मध्यमपुरुष अन्त में रहेगा और क्रिया के लिंग, वचन उसी के अनुसार होंगे। मध्यम

और उत्तमपुरुष के कर्त्ता रहने पर उत्तमपुरुष अन्त में रहेगा और क्रिया के लिंग, वचन उसी के अनुसार होंगे तथा तीनों पुरुषों के कर्त्ता रहने पर भी उत्तमपुरुष ही अन्त में रहेगा और उसी के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन होंगे।

*कर्म का क्रिया से अन्वय*:—जहाँ क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं, वहाँ नीचे लिखे नियम लागू होते हैं:—

राम ने घोड़ा और बैल बेचे। हमने गाय और भैंस खरीदीं।

इन वाक्यों से सिद्ध होता है कि विभक्ति रहित कर्मवाले वाक्य में अगर एक ही लिंग और वचन के अनेक प्राणिवाचक कर्म हों तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में आती है।

क्या तुमने घोड़ा और गाय खरीदे? मैंने गाय और बैल खरीदे हैं।— इन वाक्यों से सिद्ध होता है कि विभक्तिरहित कर्मवाले वाक्य में यदि भिन्न-भिन्न लिंगों के अनेक कर्म आवें तो क्रिया पुंल्लिंग, बहुवचन होती है।

भगवान् ने मनुष्य के दो कान और दो आँखें दी हैं।

क्या तुमने छाता, छड़ी, लोटा, थाली और पुस्तकें बेच दीं?

इन वाक्यों से सिद्ध होता है कि—विभक्ति रहित कर्मवाले वाक्य में यदि भिन्न-भिन्न लिंग और वचनवाले अनेक कर्म हों तो क्रिया के लिंग, वचन अन्तिम कर्म के अनुसार होते हैं।

तुमने जूता या टोपी खरीदी है।

श्याम ने धोती या छाता खरीदा।

इन वाक्यों से सिद्ध होता है कि—विभक्तिरहित कर्मवाले वाक्य

भिन्न-भिन्न लिंगवाले अनेक कर्मों के बीच यदि 'या' आदि प्रयोजक अव्यय हों तो क्रिया के लिंग, वचन अन्तिम कर्म के अनुसार होते हैं।

ईश्वर ने जमीन, आसमान, तारे, कंकड़ और पत्थर सब बनाये हैं।—इस वाक्य से सिद्ध होता है कि विभक्तिरहित अनेक कर्मों के अन्त में यदि कोई समुदायसूचक शब्द हो तो उसी के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन होंगे।

इनके अतिरिक्त सर्वनाम के बारे में यह जान लेना चाहिए कि वे जिस संज्ञा के बदले में या साथ आते हैं उन्हीं के लिंग, वचन वाले समझे जाते हैं। अतः क्रियाएँ भी उनके साथ उसी लिंग, वचन की व्यवहृत होती हैं। जैसे—माधुरी पढ़ती है, वह गाती भी है।

## वाक्य के भेद

सोहन पढ़ता है। मैं रोज कहता हूँ कि तुम मन से पढ़ो। मोहन प्रतिदिन स्कूल जाता है, किन्तु वह कभी मन से नहीं पढ़ता।

परीक्षा से ज्ञात होता है कि पहला वाक्य केवल एक उद्देश्य और एक विधेय वाला साधारण वाक्य है। दूसरा दो छोटे-छोटे वाक्यों के मिश्रण (मिलावट) से बना है। तीसरा दो पूरे वाक्यों के संयोग से बना है। अतः वाक्य के तीन भेद माने जाते हैं।

**साधारण वाक्य**—एक उद्देश्य और एक विधेय वाले वाक्य को *साधारण वाक्य* कहते हैं।

**मिश्र वाक्य**—परस्पर सम्बन्ध रखने वाले प्रधान और अप्रधान वाक्यों से बने हुए वाक्य को *मिश्र वाक्य* कहते हैं। मिश्रण करने के लिए 'कि' आदि शब्द जोड़े जाते हैं।

**संयुक्त वाक्य**—दो वा अधिक साधारण अथवा मिश्र वाक्यों से बने हुए वाक्य को *संयुक्त वाक्य* कहते हैं। संयोग कराने के लिए *और, किन्तु, परन्तु, बल्कि* आदि संयोजक या विभाजक अव्यय जोड़े जाते हैं।

## वाक्य-विश्लेषण

किसी वाक्य के सभी अंगों को अलग-अलग कर देने और उनके परस्पर सम्बन्ध बताने को *वाक्य-विश्लेषण* कहा जाता है।

वाक्य तीन प्रकार के होते हैं, साधारण, मिश्र और संयुक्त। इसलिए पहले यह देख लेना चाहिए कि जिस वाक्य का हम विश्लेषण करने जा रहे हैं वह कैसा वाक्य है। यदि साधारण वाक्य हो तो *उद्देश्य, उद्देश्य का विस्तार, विधेय* और *विधेय का विस्तार* ये चार बातें बतानी अत्यन्त आवश्यक हैं। विधेय के विस्तार में कर्म के साथ *कर्म का विस्तार* और *विधेयार्थ वर्द्धक* आदि भी बताये जाते हैं। अतः कुल ६ बातें साधारण वाक्य में बतानी चाहिए।

मिश्र वाक्य के विश्लेषण में यह देखना आवश्यक है कि उसमें प्रधान वाक्य कौन है और अंग-वाक्य कौन है। उन्हें अलग-अलग कर देना चाहिए और साधारण-वाक्य के समान ही विश्लेषण करना चाहिए। विशेषता यही है कि उन वाक्यों के *संयोजक* के लिए भी स्थान देना होगा और *प्रधान* तथा *अंग वाक्य* का भेद बता देना होगा।

संयुक्त वाक्यों के विश्लेषण में भी वाक्य-खंडों को तोड़कर साधारण वाक्यों के समान ही विश्लेषण करना चाहिए। यदि खण्ड वाक्य भी मिश्र हों तो उन्हें भी तोड़ा जायगा और मिश्र-वाक्य के समान विश्लेषण करना होगा।

प्रकोष्ठ बनाकर नीचे वाक्य-विश्लेषण बताये जाते हैं:—

*विश्लेषण के लिए वाक्य*--

१. श्याम की बिल्ली मेरा दूध धीरे-धीरे पीती है।
२. यह देश पर साल से स्वतन्त्र हो गया है।
३. नये शिक्षक ने वर्ग में आज हमें हिसाब पढ़ाया।
४. तुझे कल सब पुस्तकें देनी होंगी।

## विश्लेषण—

वाक्य का भेद—साधारण वाक्य

| उद्देश्य | | विधेय | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | विस्तार | | |
| उद्देश्य (कर्त्ता) | विस्तार | क्रिया | कर्म | कर्मका विस्तार | विधेय-वर्द्धक |
| १. बिल्ली | श्यामकी | पीती है | दूध | मेरा | धीरे-धीरे |
| २. देश | यह | हो गया है स्वतंत्र (पूरक) | — | — | पर साल से |
| ३. शिक्षकने | नये | पढ़ाया | हिसाब | हमें | वर्ग में आज |
| ४. तुझे | — | देनी होंगी | पुस्तकें | सब | कल |

*विश्लेषण के लिए वाक्य*:—

१. मेरे शिक्षक चाहते हैं कि मैं बाहर पढ़ने के लिए न जाऊँ।

२. यह सबलोग जानते हैं कि मनुष्य निरन्तर विकास की ओर बढ़ता रहता है।

३. आज पत्रों में छपा है कि हैदराबाद का युद्ध शुरू हो गया।

| वाक्य का भेद:— | मिश्र वाक्य |
|---|---|
| प्राधन वाक्य :— | अंग वाक्य :— |
| [क) मेरे शिक्षक चाहते हैं । | (क) मैं बाहर पढ़ने के लिए न जाऊँ । |
| (ख) यह सबलोग जानते हैं । | ख) मनुष्य निरन्तर विकास की ओर बढ़ता रहता है । |
| (ग) आज के पत्रों में छपा है । | (स) हैदराबाद का युद्ध शुरू हो गया । |

| संयोजक शब्द | उद्देश्य | | | विधेय | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | उद्देश्य कर्त्ता | विस्तार | क्रिया | विस्तार | | |
| | | | | क्रिया | कर्म का विस्तार | विधेयार्थ वर्द्धक |
| १. कि | शिक्षक | मेरे | चाहते हैं | सारा अंग वाक्य | — | — |
| | मैं | — | जाऊँ | | | बाहर, पढ़ने के लिए न |
| २. कि | लोग | सब | जानते हैं | सारा अंग वाक्य यह | — | — |
| | मनुष्य | — | बढ़ता रहता है | | — | निरन्तर विकासकी ओर |
| ३. कि | सारा अंग वाक्य | — | छपा है | — | — | पत्रों में |
| | युद्ध | हैदराबाद का | हो गया | — | — | शुरू |

| उद्देश्य वा कर्त्ता | उद्देश्य का विस्तार वा कर्त्ता का विशेषण | विधेय वा क्रिया | विधेय का विस्तार | कर्म वा विधेय-वस्तार | कर्म का विशेषण और विस्तार |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| विद्यार्थी | तेज | सुनते | ध्यान से | उपदेश | उचित अपने शिक्षक का। |

संयुक्त-वाक्यों का विश्लेषण भी इसी प्रकार कोष्ठक बनाकर करना चाहिये।

## पद-परिचय

वाक्यों में व्यवहृत शब्दों के भेद, प्रकार, रूप और परस्पर के सम्बन्ध आदि को बताना *पद-परिचय* कहा जाता है। इसे *पद-निर्देश*, *पद-निर्णय* आदि भी कहते हैं।

पद-परिचय के लिए नीचे लिखी बातें बताना आवश्यक है।

**संज्ञा के**—भेद, लिग, वचन, कारक, पुरुष और क्रिया से उसका संबंध।

**सर्वनाम के**—भेद, पुरुष, लिंग वचन, कारक और दूसरे शब्दों के साथ उसका संबंध।

**विशेषण के**—भेद, सम्बन्ध और विशेष्य।

**क्रिया के**—भेद, वाच्य, काल-भेद, लिंग, वचन, पुरुष और संबंधी।

अव्यय के—भेद, यदि संयोजक वा वियोजक हो तो उसका संबंध ।

नीचे एक वाक्य का पद-परिचय दिया जाता है ।

मैं सुनता हूँ कि पं० दुर्गादत्त परमहंस डुमराँव के बगीचे में बैठकर योग की दिव्य शिक्षा देते थे ।

मैं—सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तमपुरुष, पुंल्लिंग, एकवचन, कर्त्ताकारक, इसकी क्रिया 'सुनता हूँ' है ।

सुनता हूँ—क्रिया, सकर्मक, कर्तृप्रधान, सामान्य वर्त्तमान, पुंल्लिंग, एकवचन, उत्तमपुरुष, इसका कर्त्ता 'मैं' है ।

कि—संयोजक अव्यय, मैं सुनता हूँ'को अगले वाक्य से मिलाता है ।

पं० दुर्गादत्त परमहंस—उपाधि-सहित संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुंल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्त्ता कारक, इसकी क्रिया 'देते थे' है ।

डुमराँव के—संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुंल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, सम्बन्ध कारक, इसका संबंधी 'बगीचे में' है ।

बगीचे में—संज्ञा, जातिवाचक, पुंल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, अधिकरण कारक, 'डुमराँव का सम्बन्धी' ।

बैठकर—क्रिया, पूर्वकालिक ।

योग की—संज्ञा, जातिवाचक, पुंल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, संबंध-कारक, इसका सम्बन्धी 'शिक्षा' है ।

दिव्य—विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, इसका विशेष्य 'शिक्षा' है ।

शिक्षा—संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्म-कारक 'योग' का सम्बन्धी ।

देते थे—क्रिया, सकर्मक, कर्तृप्रधान, अपूर्णभूत, पुंल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, इसका कर्त्ता 'पं० दुर्गादत्त परमहंस' है और कर्म है 'शिक्षा'।

### अभ्यास

१. शुद्ध करोः—पृथ्वी, तारे, सूर्य सब नष्ट हो जायगा। हम और तुम चलोगे। नरेश और दीनानाथ स्कूल जाता है।

२. वाक्य के कितने भेद हैं? मिश्रवाक्य से क्या समझते हो? एक संयुक्त वाक्य लिखकर उसे साधारण वाक्यों में बदलो। तीन साधारण वाक्य लिखकर उन्हें एक मिश्रवाक्य में बदलो।

३. वाक्य-विश्लेषण करोः—रामनगर में एक तपस्वी साधु रहते थे।

४. पद-परिचय दोः—श्याम मेरी बात नहीं मानता है।

## चिह्न-विचार

वाक्यों, वाक्यांशों, शब्दों और शब्दांशों की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ बताने के लिये अनेक प्रकार के चिह्न व्यवहार में आते हैं। उनका परिचय नीचे लिखा जाता है—

**पूर्ण-विराम**–( । ) जब कोई वाक्य बिल्कुल पूरा हो जाता है तब उसके अंत में पूर्ण-विराम का चिह्न ( । ) लाते हैं।

जैसे—विद्यार्थी को सबेरे उठना चाहिये। प्रातःकाल स्वच्छ हवा बहती है। स्वास्थ्य के लिए वह बड़ी लाभदायक है।

**अल्प-विराम**–( , ) इसका व्यवहार नीचे लिखे हुए स्थानों में होता है—

(१) पद, पदांश, वाक्यांश या वाक्य को अनेक बार संयोजक वा वियोजक अव्यय की आवश्यकता होने पर अन्तिम बार ही वह अव्यय रहता है और पूर्ववाले स्थानों में अल्प-विराम का चिह्न दिया जाता है। जैसे—लकड़ी, नमक, तेल, चावल और दाल की चिन्ता में ही विद्वान् बेचारे परेशान हैं।

(२) वाक्यों को जोड़नेवाले अव्यय जब अप्रयुक्त रहते हैं, तो यह दिया जाता है। जैसे—मैं क्या करूँगा, मुझे मालूम नहीं। मै देखता हूँ, तुम्हारी आदत बिगड़ती जा रही है।

(३) किन्तु, परन्तु, पर, अतः, इसलिए, जिससे आदि वाक्य के बीच में आते हैं तो इनके पहले अल्पविराम दिया जाता है। जैसे—तुम खाते हो, पर पचा नहीं सकते। मैं सोता हूँ, क्योंकि अब दस बज गये।

(४) यदि वाक्य का विधेय-अंश किसी पद या वाक्यांश के बीच में आ जाने से असम्बद्ध-सा होकर दूर पड़ जाता है तो बीच में पड़े हुए पद या वाक्यांश के पूर्व और आगे यह चिह्न दिया जाता है। जैसे—तुम्हारा यश, देश-विदेश, सब जगह फैल रहा है। आज एक लड़का, जो किसी गरीब किसान का था, भूख से तड़फड़ा रहा था।

(५) सम्बोधन के बाद भी यह आता है। जैसे—परमेश्वर, मेरी मदद करो।

अर्द्ध विराम—( ; ) जब दो वाक्यों क[illegible]र का सम्बन्ध सूचित करने के लिये *बल्कि*, *प्रत्युत* आदि अव्यय आते हैं, तो उनके पहले यह चिह्न दिया जाता है। जैसे—बूढ़ा होकर खाट पर

सड़ कर मरना अच्छा नहीं; प्रत्युत् यह नरक भोगना है।

**विस्मयादिसूचक**—( ! ) हर्ष, शोक, भय विस्मय आदि बताने के लिए अव्ययों के आगे यह चिह्न दिया जाता है। जैसे; वाह! खूब गाया। हाय! पराधीनता से अच्छी मौत है।

**प्रश्नसूचक**—( ? ) प्रश्न बताने के लिए यह चिह्न दिया जाता है। जैसे—क्या आज कुछ खाना नहीं मिला है? तुम कहाँ रहते हो?

**योजक**—( - ) समस्त और द्विरुक्त शब्दों को जोड़ने के लिए यह चिह्न आता है। जैसे; कोमल कान्त-पदावली 'हरिऔध' जी जी की अपनी चीज है। बाबू साहब जब-तब यहाँ चले आते हैं और पिनक में बकते-झकते चले जाते हैं।

**निर्देशक** ( — ) वाक्य के भीतर कोई विशेष वक्तव्य बताने के लिए इसका व्यवहार होता है। जैसे, आज भी ब्राह्मण— चाहे वे गिरे हुए हैं—संस्कृत की रक्षा कर रहे हैं।

**अग्रदर्शक** ( :— ) इसे डैस ही कहा जाता है। कोई उद्धरण या वक्तव्य आगे दिखाने के लिए इसे दिया जाता है। जैसे—टाड ने लिखा है:—"राजपूत के बच्चे दुनिया के सभी बच्चों से साहसी होते हैं।"

**उद्धरणसूचक**— ( " " ) ( ' ' ) किसी दूसरे की उक्ति आदि प्रकट करने के लिए यह व्यवहृत होता है। उदाहरण के लिए ऊपर का वाक्य देखो।

**बन्धनी** ( ) [ ] इसे कोष्ठक भी कहते हैं। वाक्य में किसी बात को स्पष्ट करने के लिए इसका व्यवहार होता है।

जैसे—भारतीय युवकों के साथ उदर-भरण ( रोटी का ) एक कठिन प्रश्न है।

# परिशिष्ट

## छन्दों का विवरण

मात्राओं तथा वर्णों की गिनतीवाली वाक्य-रचना को छन्द कहते हैं। पद्य भी इसी का नाम है। छन्दों में प्रायः चार चरण अर्थात् पाद होते हैं। किसी-किसी में छः चरण भी होते हैं।

छन्दों के दो भेद होते हैं :—

**(१) मात्रावृत्त वा मात्रिक (२) वर्णवृत्त वा वर्णिक।**

**मात्रावृत्त**—जिस छन्द में मात्राओं की गणना की जाती है, उसे मात्रिक छन्द कहते हैं।

**वर्णवृत्त**—जिस छन्द में वर्णों की गणना की जाती है, उसे वर्णिक छन्द कहते हैं।

*मात्राओं की गणना करने के लिये यह जान लेना चाहिये कि—*

(१) ह्रस्व अ इ उ ऋ ये स्वर और इनके साथ व्यवहृत होने वाले व्यञ्जन एकमात्रिक ( एक मात्रा वाले लघु ) कहे जाते हैं।

(२) ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ को छोड़कर कुल स्वर दीर्घ और उनसे युक्त व्यञ्जन द्विमात्रिक ( दो मात्रा वाले ) वा गुरु कहे जाते हैं।

(३) अनुस्वार और विसर्ग से युक्त वर्ण गुरु समझे जाते हैं।

(४) संयुक्त वर्णों के पूर्ववाला वर्ण ह्रस्व हो तो भी प्रायः वह वर्ण गुरु समझा जाता है—जैसे; "सुन्दर मन्दिर बना हुआ है गंगा

तट पर।" किन्तु चन्द्रबिन्दु से युक्त वर्ण लघु ही रहता है। जैसे--

कहुँ धनु कुलसहि चाहि कठोरा।
कहुँ श्यामल मृदु गात किसोरा॥

(५) व्रजभाषा के पद्यों में गति अर्थात् प्रवाह याने लय ठीक रखने के लिये कभी-कभी दीर्घ को भी लघु समझा जाता है।

जैसे--सिन्धु *तीर* एक सुन्दर भूधर। कौतुक कूदि चढै तेहि ऊपर॥

वर्णवृत्तों में कोई भी स्वर वा स्वर-युक्त, संयुक्त अथवा असंयुक्त व्यञ्जन एक वर्ण समझा जाता है।

दोनों के छन्दों में प्रवाह ठीक रखने के लिए *गण* का ज्ञान अपेक्षित है। अतः उसे नीचे समझाया जाता है।

लघु वा गुरु तीन-तीन वर्णों के एक-एक गण होते हैं। गण आठ हैं। मगण, नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण और तगण।

म-न-भ-य-ज-र-स-त—गण हैं अष्ट।
बिन जाने हो छन्द विनष्ट॥

लघु वर्ण का चिह्न खड़ी पाई है और गुरु वर्ण का चिह्न टेढ़ी सी ( S ) ऊपर से नीचे की ओर रेखा है। इसके अनुसार सभी वर्णों के स्वरूप बताये जाते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| मगण | S S S | जगण | । S । |
| नगण | । । । | रगण | S । S |
| भगण | S । । | सगण | । । S |
| यगण | । S S | तगण | S S । |

मगण गुरुत्रय नगण लघुत्रय, भगण आदिगुरु जानो।
यगण आदि लघु, जगण मध्यगुरु, रगण मध्यलघु मानो॥
सगण अन्तगुरु, तगण अन्तलघु—इन्हें याद कर लेना।
छन्दों की रचना करने में यथा स्थान धर देना॥

चरणों की रचना में भिन्नता के कारण मात्रिक छन्दों के तीन भेद और हैं। समवृत्त, अर्द्धसमवृत्त और विषमवृत्त।

१. समवृत्त—जिसके चारों चरण बराबर हों।

२. अर्द्धसम—जिसके दो चरण सम और दो चरण विषम या बेमेल के हों अथवा जिसके दो से अधिक चरण सम न हों।

३. विषम—जिसके चारों चरण विषम हों।

## विशेष--

हिन्दी पद्य-रचना में अनुप्रास अर्थात् तुकबन्दी आवश्यक समझी जाती रही है। कुछ संस्कृत छन्दों को छोड़कर तुक अवश्य मिलाना चाहिए। *चरणों के अन्त में सस्वर व्यञ्जनों की समानता को तुक कहते हैं।*

नीचे कुछ प्रचलित छन्दों के लक्षण और उदाहरण दिये जाते हैं

मात्रिक समवृत्त:—

*उल्लाला*--[ इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं। ]

देश प्रेम की आग में तप न सका है जो कभी।
उसे डूबकर गर्त्त में मर जाना अच्छा अभी॥

चौपाई—[ इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं। ]

पर हित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥
नर शरीर धरि जे पर पीरा। करहिं ते सहहिं महा भव पीरा॥

सुमेरु [ इसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ होती हैं। ]

तुम्हे क्या देश का दुखड़ा सुनाऊँ।
कहाँ है शक्ति वाणी में कि गाऊँ॥
यही संकेत है तुमसे हमारा।
जगा दो देश का उज्ज्वल सितारा॥

*रोला*—[ इसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ होती हैं। भिन्न-भिन्न गति के कारण इसके कई भेद होते हैं। ]

सोने का यह देश हमारा कहलाता था।
सुनते हैं, अखिलेश यहाँ मन बहलाता था॥

*गीतिका*—[ इसके प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ होती हैं। भिन्न-भिन्न गति के कारण इसके कई भेद हैं। ]

सभ्य कहलाते हुए भी हो दिखाते क्रूरता;
नीच मानव! क्या इसीमें है तुम्हारी शूरता?
घोर नर-संहार घर में देखकर किसका भला,
दृश्य का व्याख्यान करते भर न जाता है गला?

*सरसी*—[ इसके प्रत्येक चरण में २७ मात्राएँ होती हैं और १६ मात्राओं के बाद यति हुआ करती है। ]

लात मारने पर सिर चढ़ती है हल्की-सी धूल।
यही नहीं, आँखों में पड़कर भी पहुँचाती शूल॥
कुचले जाने पर भी जिसको हुआ नहीं संताप।
जीता है या मरा हुआ, वह जड़ सोचे आप॥

*हरिगीतिका*—[ इसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं। 'हरिगीतिका' नाम को चार बार पढ़ लेने पर भी इसका एक चरण बन जाता है। ]

जीते रहें हम हे विभो! तो देश की सेवा करें;
पड़कर बिछावन पर नहीं, निज देश हित लड़कर मरें।
बस, दो प्रतिज्ञाएँ हमारी हे प्रभो! पूरी करो!
विचलित न होवें हम, हृदय में तुम सदा साहस भरो!

*ताटंक*—[ इसके प्रत्येक चरण में ३० मत्राएँ होती हैं। १६ तथा १४ मात्राओं पर प्रायः यति होती है ]

ढोती है दस मास गर्भ में तुमसे दुःख न कहती है।
तेरे हेतु अपार वेदना प्रसव-काल में सहती है॥
तुझे पालने में कष्टों का सदा सामना करती है।
भूखी भी रहकर वह तेरे लिए रोटियाँ धरती है॥

चवपैया—[ ताटङ्क के समान इसमें भी ३० मात्राएँ होती हैं, परन्तु १०-८-१२ मात्राओं पर यति होने से इसकी गति बदल जाती है ]

जैसे:—भे प्रगट कृपाला, दीन दयाला, कौशल्या हितकारी।
हर्षित महतारी, मुनि मनहारी, अद्भुत रूप निहारी॥
लोचन अभिरामा, तनु घनश्यामा, निजआयुध भुजचारी।
भूषण वनमाला, नयन विशाला, शोभा सिंधु खरारी॥

वीर—[ ताटंक के अन्त में एक मात्रा बढ़ा देने पर अर्थात् ३१ मात्राएँ कर देने पर वीर छन्द होता है। यति और गति वही रहती। ]

जैसे—कड़-कड़ कड़क रही कड़ियाँ झन-झन, झन झनक रही जंजीर।
धूल उड़ाती चली जा रही वीरों की सेना गंभीर॥
घिरी हुई अस्त्रों से है, पै मुख-मण्डल पर है मुसकान।
'भारतमाता की जय' गाती जाती होने को बलिदान॥

आल्हा—[ ८-८—१५ मात्राओं पर यति देकर वीर छन्द का यह दूसरा भेद है। आल्हा और ऊदल की कथा इसी छन्द में लिखी जाने से यह नामकरण हुआ ]

कुँवर सिंह की भई लड़ाई जिसकी कथा कही न जाय।
सहस शेष भी ना गा सकिहैं हम का कहौं तोहि समझाय॥
मुरचा खुदी गढ़ी के चहुँदिसि घहर-घहर गोला घहराय।
बाल न बाँका होय सका कछु रक्षा करो भगवती माय॥

## मात्रिक अर्द्ध सम:—

बरवै—[ इसके प्रथम तथा तृतीय अर्थात् विषम चरणों में १२-१२मात्राएँ द्वितीय तथा चतुर्थ अर्थात् सम चरणों में७—७ मात्राएँ होती हैं। ]

करता जा निज कर से, सुन्दर-काम।
धरता जा रसना पर, रघुवर नाम॥

दोहा—[ इसके प्रथम तथा द्वितीय अर्थात् विषम चरणों में १३-१३ मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ अर्थात् सम चरणों में ११-११ मात्राएँ होती हैं। ]

बिनु जाँचे भोजन मिलै, राम जपत छन मौत।
तुम किसान पशु हौ सदा, एही माँगो गौत॥१॥
भोजन को सत्तू मिलै छाजन गाड़रि रोम।
राम-नाम मुख ते कढ़ै कौन गने सुख व्योम॥

सोरठा—[ दोहे का उल्टा प्रथम और तृतीय में ११-११ और द्वितीय तथा चतुर्थ में १३-१३ मात्राएँ होती हैं। ]

जेहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करिवर वदन।
करहु अनुग्रह सोय, बुद्धिराशि शुभ-गुण-सदन॥

छप्पैय - [ रोला के बाद उल्लाला जोड़ देने से यह छः चरणों का छप्पय छन्द बनता है। ]

स्वप्न माँझ लहि द्रव्य सर्व निशि युगवत बीते।
बहुत कष्ट मन छिन्न-भिन्न सुख ते अति रीते॥
जोरत जोरत जोड़ कबहुँ इक ठीक ने आवै॥
कबहुँ घटे बढ़ि जाय चित्त थिति कबहुं न पावै॥
स्वप्न माँझ त्यों द्रव्य दुख जाग्रत कत दुख देइहैं।
दास रमायन तोहि धिक् दुख लगि द्रव्य जु सेइहैं॥

कुण्डलिया—[ दोहे के बाद रोला जोड़ने से यह छन्द बनता है, किन्तु ध्यान रखना चाहिए कि दोहे के अन्तिम चरण को लेकर ही रोला शुरू होगा तथा

रोला का अन्तिम शब्द वही रखना होगा, जो दोहे के आदि में हों। हाँ, कभी-कभी इस नियम का पालन नहीं भी होता है। ]

गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय॥
शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग काग सब भये अपावन॥
कह गिरधर कविराय सुनो हे ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥

[ छप्पय और कुण्डलिया को विषमवृत्त समझना चाहिये। ]

## वर्णिक-छन्द

इन्द्रवज्रा—[ इसके प्रत्येक चरण में ११ वर्ण होते हैं। गति ठीक रखने के लिए क्रमशः दो तगण, एक जगण और दो गुरु रखना चाहिए। ]

हे देव, सारे दुख को दुराओ,
आशा लगी है उसको पुराओ,
तेरी मही में कटु कृत्य होता।
हे चक्रधारी दुख देख जाओ॥

उपेन्द्रवज्रा— [ इसके भी प्रत्येक कारण में ११ वर्ण होते हैं, किन्तु क्रमशः जगण, तगण और दो गुरु होने चाहिए।

यदा यदेत्यादि सुवाक्य तेरा
हमें वशीभूत किये हुआ है।
न आ सको जो, तब साफ बोलो
कि—यों प्रशंसा हित ही कहा है।

उपजाति—[ऊपर के दोनों छन्दों के चरण मिल जाने से यह छन्द बनता है। के अनेक भेद होते हैं।]

जंगप्रयात— [इसमें १२ अक्षर होते हैं। चार जगण का यह छन्द होता है।]

गिरे को गिराना, मरे के सताना,
जलाना जले को. यही वीरता है?
अरे शौक है तो बढ़ो और आगे,
बता दो सबों को कि क्या धीरता है।

['भुजङ्गप्रयातम्' इस शब्द को दो बार पढ़ने से भी एक चरण बन जाता है।]

ोटक—इसमें भी १२ अक्षर होते हैं। प्रत्येक चरण में चार सगण होना चाहिए।

जग नश्वर है जग नश्वर है—
कहता जन जो वह कायर है
जग में लड़ने, भिड़ने मरने—
पहुँचा करता जगदीश्वर है।

ुतविलम्बित—[इसमें भी १२ अक्षर होते हैं, किन्तु यह एक नगण, दो भगण और एक रगण से बनता है]

प्रकृति के सुमनोहर वक्ष से।
सुरभि ले उड़ती वह षट्पदी
पर न सोच उसे कुछ भी अहो!
उचित लूट नहीं पर गेह में।

मालिनी—[इसमें १५ अक्षर होते हैं। प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण और दो जगण होना चाहिए]

घन पटल कहीं जो व्योम में श्याम छाये
शिखि कुल लखि पाता है महामत्त होता

.तिमि बन मतवाला ले रहा नाम तेरा
स्मर निज पन को क्या है प्रभो, त्राण दोगे ?

मन्दाक्रान्ता—[इसमें १३ अक्षर होते हैं। प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं।

रोते हो क्यों कथन करके पूर्वजों की कथाएँ।
सोते हो क्यों सहन करके यातना की व्यथाएँ।
जीना है जो भुवन तल में, तो उठो आँख खोलो।
"मैं रोगी हूँ, अति निबल हूँ" कायरों सा न बोलो ॥

सवैया—इसके कई भेद होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में २२ से लेकर २ अक्षर तक पाये जाते हैं। वर्ण गणना के साथ-साथ गण का विचार रखा जाता है। किन्तु, पहले कहा गया है कि व्रजभाषा में कभी कभी ह्रस्व को गुरु और गुरु को ह्रस्व पढ़ा जाता है। अतः उच्चारण के अनुसार ही गण की गणना होती है।

(क) मदिरा—[ इसके प्रत्येक चरण में २२ अक्षर होते हैं। सात भगण और एक गुरु क्रमशः रखे जाते हैं।

साग वो सतू मिलै लतरी तनि सिन्धु के लौन परै रगरी।
भोजन-पात्र है पथरी अरु ओढ़न को कमरी कथरी ॥
डासन को कुस की सथरी अरु वास चहौं सरयू कगरी।
दास रमायन माँगतु हौं तुलसी कर माल दिये जुधरी ॥

(ख) मत्तगयंद—[ इसमें २३ अक्षर होते हैं। क्रमशः सात भगण और दो गुरु रखे जाते हैं। ]

भेड़ी की पूँछ गहै न लहै कोउ पार महासरिता सरि भारी।
वारि महै न लहै घृत को कोउ, दीपक ते दिन सो उजिआरी ?

भूत भजै न लहै नर मुक्तिहुँ कोटिन भाँति करै उपचारी !
दास रमायन राम रटै बिनु कौन सकै भवसागर तारी ॥

(घ) किरीट--[इसके प्रत्येक चरण में २४ अक्षर होते हैं। आठ भगण क्रमशः रखे जाते हैं।]

मानुस हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वहै गिरि को जो भयो ब्रज छत्र पुरन्दर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं उन कालिन्दी कूल कदंब की डारन ॥

(ङ) सुन्दरी—[इसमें २५ अक्षर होते हैं। आठ सगण और एक गुरु क्रमशः रखे जाते हैं]

तन तख्त पै ताज लहै कबहूँ बिनु डासन भूमि पै लोटे।
कबहूँ बहु भोजन देखि भजै कबहूँ तनि सत्तु को दाँत खसोटे।
औबहि में नहिं हर्ष बिषाद करो मन या तन-खेत बये सोई खोटे।
रटु दास रमायन राम खुदा, बिलसो निसि बासर नाम के ओटे ॥

घनाक्षरी—[इसको 'कवित्त' वा 'मनहरण' भी कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में ३१,३२ वा ३३ अक्षर होते हैं। इसमें गण का बन्धन नहीं होता केवल लय अर्थात् प्रवाह पर ध्यान देते हुए १५ वें अक्षर पर यति होनी चाहिए। ३१ अक्षर वाले कवित्त में अंतिम अक्षर गुरु होना चाहिए तथा ३३ और ३२ वाले में लघु। ३२ और ३३ अक्षर वाले कवित्त का अन्तिम शब्द दो बार आने पर वह पद की सुन्दरता बढ़ा देता है।]

-३१ अक्षर वाला—सादगी सुधा को सभी हिन्दू अपनावें न तो-
सीतते रहेंगे, सिद्धता भी मिट जायगी।
फैशन-पिपासापाश से न यदि मुक्ति लें, तो
मुक्ति की भी आशा आशा-मात्र रह जायगी।
भेद भाव भूत को जो भूत में रखेंगे, तब
द्वेष-विष-वल्लरी की जड़ कट जायगी।
धुलेगा कलंक 'कान्त' सूर्यकान्त सम होंगे
इन्हीं की प्रभा की धाक धरणी में छायगी।

-३२ अक्षरवाला—

टूटे घर फाट्यो पट पेय गये खेत ढिग
पावस अँधियारी मेघ डारे तमकि तमकि।
दामिनी दरिद्रिन को कौन ऐसो सूझि पर्यो
काटन जनु धावै डरपावै चमकि चमकि॥
दादुर डरावरे टरात सब टायँ टायँ
जीव-जन्तु भागि भागि ठहरे ठमकि ठमकि।
कृषक की हाय, दीन गेहिनी के नैन-नीर
पावस की बूँद संग झहरै झमकि-झमकि॥

---

१९५०

मूल्य ॥≡)॥